चिकित्सा को हमेशा समाजसेवा का माध्यम माना है: डॉ. आनंद

दिव्य हिमगिरि

हिमालयी राज्यों की पहली साप्ताहिक पत्रिका

नज़र सब पर

15th ANNIVERSARY

वर्ष 15 | अंक 44 | मूल्य 05 रुपये | 22-28 मार्च, 2026

देहरादून में भी कमर्शियल सिलेंडर के संकट से जूझते रेस्टोरेंट और ढाबे

चार धाम यात्रा के लिए श्रद्धालुओं का रिकॉर्ड रजिस्ट्रेशन

मंत्रिमंडल में नए चेहरों के साथ नई रणनीति

EXPERIENCE HELI TOUR WITH

Himgiri
Aviation & Tourism
SINCE 2018

3N/4D TOUR

A Unit of
दिव्य हिमगिरि

केदार-बद्री यात्रा

BY HELICOPTOR

OPENING DATES

KEDARNATH	BADRINATH
22 April, 2026	23 April, 2026

ADVANCE BOOKING STARTS **BOOK NOW**

Contact for Reservation | 8433456398, 9410353164

Email: himgiritourism@gmail.com
6 Municipal Road, Opp. Oxford School of Excellence, Dalanwala, Dehradun-248001 (UK)

दिव्य हिमगिरि

22-28 मार्च, 2026

संपादक
डॉ. कुँवर राज अस्थाना

वरिष्ठ संवाददाता
शंभूनाथ गौतम

संवाददाता
पूनम आर्या

विज्ञापन
सुनील सेमवाल

ग्राफिक डिजायनर
देव भट्ट

संवाददाता
हरिद्वार: डॉ. रजनीश गौतम
पौडी: रत्नमणि भट्ट
कोटद्वार: के.पी. बौंठियाल
रूद्रपुर: हेमचन्द्र बुडलाकोटी
चमोली: मुकेश रावत
रुड़की: श्रीगोपाल नारसन
नैनीताल: शीतल तिवारी
अल्मोड़ा: संजय कुमार अग्रवाल (एड.)
विकासनगर: अजय शर्मा
प्रसार: रमेश सिंह रावत

संपादकीय कार्यालय : 6, म्युनिसिपल रोड, बाला हिसार स्कूल के सामने, डालनवाला देहरादून (उत्तराखंड)
मोबाइल : +91 8433456398, 9410353164
Email: divyahimgiriddn@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक कुँवर बहादुर अस्थाना द्वारा आईशा प्रिंटिंग प्रेस, 292/1, चुक्खूवाला, ओंकार रोड, देहरादून-248001 उत्तराखण्ड से प्रकाशित।
संपादक: कुँवर बहादुर अस्थाना*

*(पीआरबी एक्ट के तहत प्रकाशित सामग्री के लिए उत्तरदायी)

युद्ध के बीच दुनिया में बढ़ता ऊर्जा संकट का खतरा

पश्चिम एशिया में जारी युद्ध के बीच अंतरराष्ट्रीय स्तर पर यह चिंता गहरा रही है कि अगर इसका स्वरूप और बिगड़ता गया, तो आने वाले दिनों में संकट का दायरा ज्यादा व्यापक और गंभीर हो सकता है। सच यह है कि इजराइल और अमेरिका के ईरान पर साझा हमले के बाद अब युद्ध ने जो रुख अख्तियार कर लिया है, उसमें शांति की उम्मीद फिलहाल धुंधली लग रही है। हमले के क्रम में जिस तरह स्कूली बच्चों और आम लोगों तक की फिक्र नहीं की गई, उसे लेकर पहले ही अंतरराष्ट्रीय कानूनों के उल्लंघन के कई सवाल उठे हैं। अब हालात का अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि हमलों का निशाना अब दोनों पक्षों के तेल और गैस के वे ठिकाने बन रहे हैं, जिसका वैश्विक स्तर पर गंभीर असर पड़ेगा। खासतौर पर युद्ध के आगे बढ़ने के साथ-साथ खाड़ी के कई देशों में हालात बेहद जटिल होते जा रहे हैं। गौरतलब है कि इजराइल ने बुधवार को ईरान में स्थित दुनिया के सबसे बड़े प्राकृतिक गैस सुविधा केंद्र पर हमला किया। इसके जवाब में ईरान ने गुरुवार को कतर के रास लाफान के ठिकाने को निशाना बनाया, जो वहां मुख्य तरल प्राकृतिक गैस को तैयार करने वाला मुख्य केंद्र है। ईरान और इजराइल-अमेरिका के बीच युद्ध की वजह से कच्चे तेल की आपूर्ति पहले ही कई स्तरों पर बाधित है और इसका स्वाभाविक असर इसकी कीमतों पर पड़ रहा है। पिछले कुछ दिनों के भीतर कच्चे तेल के दाम में तेज बढ़ोतरी और वैश्विक स्तर पर कमजोरी के रुख से शेयर बाजार में गुरुवार को बड़ी गिरावट दर्ज की गई। एक ओर, बीएसई सूचकांक में करीब 2500 अंक की बड़ी गिरावट हुई, वहीं एनएसई निफ्टी 775 अंक लुढ़क गया। जून, 2025 के बाद इसे सूचकांक में एक दिन में सबसे बड़ी गिरावट बताया गया है। इस तरह की स्थिति को कई बार अन्य कारकों से भी जोड़ा जाता है, लेकिन इस बार वैश्विक स्तर पर तस्वीर लगभग साफ है। पश्चिम एशिया में जारी युद्ध के बीच अब ऊर्जा के बुनियादी ढांचों या तेल एवं गैस संयंत्रों पर हमलों में तेजी के बाद कच्चे तेल के दाम में काफी उछाल आया है। इसका एक स्वाभाविक असर निवेशकों की धारणा पर पड़ा है, जिनके भीतर मौजूदा उथल-पुथल को लेकर एक तरह का असुरक्षाबोध पैदा हुआ है। दरअसल, जब से ईरान ने होर्मुज जलमार्ग को रोका है, उसके बाद दुनिया भर में तेल और गैस की आपूर्ति भी बाधित हुई है। भारत जैसे कई देश इससे बुरी तरह प्रभावित हुए हैं और तेल तथा गैस के लिए वैकल्पिक स्रोतों की ओर देख रहे हैं। इस क्रम में भारत ने रूस से तेल खरीद बढ़ाई है। मगर अब पश्चिम एशिया के युद्ध में शामिल दोनों पक्षों की ओर से जिस तरह प्राकृतिक गैस का उत्पादन करने वाले केंद्रों और ऊर्जा ढांचे को निशाना बनाया जा रहा है, उससे संकट और ज्यादा गहराने की आशंका खड़ी हो रही है। जैसे-जैसे हमलों का स्वरूप जटिल होता जा रहा है, तेल और गैस की कीमतों में भारी बढ़ोतरी हो रही है। खासतौर पर कतर के रास लाफान पर हमले के बाद भारत को होने वाली प्राकृतिक गैस की आपूर्ति बुरी तरह प्रभावित होने की आशंका है। जाहिर है, भारत को अब प्राकृतिक गैस की जरूरत के लिए आस्ट्रेलिया और रूस जैसे अन्य देशों की ओर देखना पड़ सकता है। मगर सबसे ज्यादा जरूरी यह है कि अब प्राकृतिक गैस के रणनीतिक भंडारण के विकल्प को ठोस आकार देना होगा।

डॉ. कुँवर राज अस्थाना

देहरादून में भी कमर्शियल सिलेंडर के संकट से जूझते रेस्टोरेंट और ढाबे

अमेरिका-इजरायल और ईरान के बीच जारी युद्ध का असर वैश्विक स्तर से निकलकर भारत के स्थानीय बाजारों तक दिखाई देने लगा है। देहरादून में कमर्शियल गैस सिलेंडर की किल्लत ने अब रेस्टोरेंट और ढाबा कारोबार की कमर तोड़नी शुरू कर दी है। शहर के कई इलाकों में गैस की कमी के चलते खाने-पीने के प्रतिष्ठान या तो बंद हो रहे हैं या सीमित संसाधनों के साथ काम चला रहे हैं। इस संकट का सीधा असर कारोबारियों की आय और आम लोगों की रोजमर्रा की जरूरतों पर पड़ रहा है, जिससे राजधानी की रफ्तार भी धीरे-धीरे प्रभावित होती नजर आ रही है।

अमेरिका-इजरायल और ईरान के बीच जारी युद्ध का असर वैश्विक स्तर से निकलकर स्थानीय बाजारों तक दिखाई देने लगा है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ऊर्जा आपूर्ति पर पड़ रहे दबाव और लॉजिस्टिक बाधाओं के चलते देश के कई राज्यों में गैस आपूर्ति प्रभावित हुई है। इसी कड़ी में उत्तराखंड की राजधानी देहरादून भी अछूती नहीं रही है, जहां कमर्शियल गैस सिलेंडर की किल्लत ने रेस्टोरेंट, होटल और ढाबा कारोबार को गहरे संकट में डाल दिया है। देहरादून के प्रमुख बाजारों, चौराहों और व्यस्त इलाकों में स्थित रेस्टोरेंट और ढाबे इन दिनों गैस की अनियमित आपूर्ति से जूझ रहे हैं। कई प्रतिष्ठानों को मजबूरी में अपने शटर गिराने पड़ रहे हैं, जबकि कुछ सीमित संसाधनों के सहारे काम चला रहे हैं। इससे कारोबारियों की आमदनी पर सीधा असर पड़ा है और हजारों लोगों की रोजी-रोटी पर संकट खड़ा हो गया है। सबसे ज्यादा परेशानी छोटे ढाबा संचालकों और सड़क किनारे ठेले लगाने वाले लोगों को हो रही है। रोज कमाकर खाने वाले इन लोगों के सामने आजीविका का संकट खड़ा हो गया है। कई संचालकों का कहना है कि उन्हें एक-एक सिलेंडर के लिए घंटों इंतजार करना पड़ता है, फिर भी समय पर आपूर्ति नहीं हो पाती। नतीजतन ग्राहकों को लौटाना पड़ रहा है, जिससे उनकी आय पर गहरा असर पड़ रहा है। शहर के बड़े होटल और रेस्टोरेंट भी इस समस्या से अछूते नहीं हैं। कई प्रतिष्ठानों ने अपने मेन्यू सीमित कर दिए हैं, ताकि उपलब्ध गैस में काम चलाया जा सके। कुछ ने समय भी सीमित कर दिया है, जिससे खपत कम हो सके। वहीं, छोटे स्तर के कई व्यवसाय पूरी तरह बंद होने की कगार पर पहुंच गए हैं। इस संकट का असर आम लोगों की दिनचर्या पर भी साफ दिखाई दे रहा है। खासकर छात्र, नौकरीपेशा लोग और वे लोग जो बाहर खाने पर निर्भर रहते हैं, उन्हें भोजन के लिए परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। एक तरफ घरेलू गैस सिलेंडर की आपूर्ति भी प्रभावित बताई जा रही है, वहीं बाहर खाने के विकल्प भी सीमित होते जा रहे हैं। गैस एजेंसियों का कहना है कि अंतरराष्ट्रीय हालात और परिवहन संबंधी दिक्कतों के चलते आपूर्ति प्रभावित हुई है। हालांकि सरकार लगातार यह दावा कर रही है कि देश में गैस की कोई कमी नहीं है और स्थिति जल्द सामान्य हो जाएगी, लेकिन जमीनी हकीकत इससे अलग नजर आ रही है। चारधाम यात्रा का सीजन भी नजदीक है, जिससे देहरादून में पर्यटकों की संख्या बढ़ने की संभावना है। ऐसे में अगर गैस की आपूर्ति समय पर बहाल नहीं हुई, तो इसका असर पर्यटन और स्थानीय कारोबार दोनों पर पड़ सकता है।

> **कुमार रेस्टोरेंट के मालिक दीपक गुलाटी का कहना है कि कार्मिशियल सिलेंडर न मिलने का प्रभाव अब रेस्टोरेंट की इनकम पर भी पड़ना शुरू हो गया है। डीजल की भट्टी का इंतजाम किया गया है लेकिन एक तरफ जहां भट्टी ही महंगी आई है तो वहीं उसे चलाने का खर्च भी बहुत ज्यादा है। कुल मिलाकर अगर यह संकट और लंबा चला तो रेस्टोरेंट चलाने में बहुत कठिनाईयों का सामना करना पडेगा।**

कमर्शियल सिलेंडर की सप्लाई में आंशिक सुधार के संकेत, लेकिन समस्या अभी बरकरार

पिछले कुछ दिनों की तुलना में देहरादून में कमर्शियल गैस सिलेंडर की सप्लाई को लेकर हल्का सुधार देखने को मिला है। कुछ गैस एजेंसियों को अतिरिक्त स्टॉक मिलने के बाद वितरण में थोड़ी तेजी आई है। व्यापारियों का कहना है कि अब पहले की तुलना में सिलेंडर मिलने की स्थिति थोड़ी बेहतर हुई है, लेकिन यह सुधार अभी भी पर्याप्त नहीं है। कई रेस्टोरेंट संचालकों ने बताया कि पहले जहां 2-3 दिन तक सिलेंडर नहीं मिल पाता था, वहीं अब एक-दो दिन

> **डेरी संचालक सुबोध कुमार का कहना है कि डेरी से कई लोगों को बैरंग लौटाना पड रहा है क्योंकि कार्मिशियल सिलेंडर न मिलने के कारण दूध से दही और पनीर बनाने में बहुत दिक्कतों का सामना करना पड रहा है। लकड़ी की भट्टी जलाने पर धुंए आदि की समस्या होती है और उसके लिए खुला स्पेस भी चाहिए होता है। अभी तो कुछ भी समझ नहीं आ रहा है कि व्यापार को सुचारू रूप से कैसे चलाया जाए?**

नेगी ढाबे के मालिक अजय नेगी ने कहा कि हमारे ढाबे पर सुबह से शाम तक ग्राहकों का जमावड़ा रहता था जो अब कम हो गया है क्योंकि हम उनकी मांग के अनुरूप भोजन ही तैयार नहीं कर पा रहे है। रोटी तो तंदूर पर बन जाती है लेकिन सब्जी, दाल बनाने के लिए तो सिलेंडर ही चाहिए होता है और वह अभी मिल नहीं रहा है तो आगे क्या होगा कुछ पता नहीं है।

में किसी तरह व्यवस्था हो जा रही है। बावजूद इसके, मांग के मुकाबले आपूर्ति अभी भी कम है। छोटे ढाबा संचालकों का कहना है कि उन्हें अभी भी प्राथमिकता में सिलेंडर नहीं मिल पा रहा है, जिससे उनकी परेशानी जस की तस बनी हुई है। प्रशासन और गैस कंपनियों की ओर से सप्लाई चेन को दुरुस्त करने के प्रयास तेज किए गए हैं। परिवहन और वितरण व्यवस्था में सुधार के लिए अतिरिक्त संसाधन लगाए जा रहे हैं। उम्मीद जताई जा रही है कि आने वाले दिनों में स्थिति और बेहतर होगी। इसके बावजूद, व्यापारियों और आम लोगों की चिंता खत्म नहीं हुई है। उनका कहना है कि जब तक नियमित और पर्याप्त मात्रा में गैस की आपूर्ति सुनिश्चित नहीं होती, तब तक हालात सामान्य नहीं हो सकते। खासकर चारधाम यात्रा के दौरान बढ़ने वाली भीड़ को देखते हुए गैस की उपलब्धता बेहद जरूरी हो जाती है। अंतरराष्ट्रीय हालात से शुरू हुआ यह संकट अब देहरादून के स्थानीय कारोबार और आम जनजीवन को गहराई से प्रभावित कर रहा है। भले ही सप्लाई में थोड़ा सुधार हुआ हो, लेकिन स्थिति अभी भी पूरी तरह सामान्य नहीं हो पाई है। आने वाले समय में प्रशासनिक प्रयास और आपूर्ति व्यवस्था की मजबूती ही तय करेगी कि यह संकट कब खत्म होगा और शहर की रफ्तार फिर से कब पटरी पर लौटेगी।

चार धाम यात्रा के लिए श्रद्धालुओं का रिकॉर्ड रजिस्ट्रेशन

चारधाम यात्रा 2026 को लेकर श्रद्धालुओं में इस बार जबरदस्त उत्साह देखने को मिल रहा है। यात्रा शुरू होने से पहले ही पंजीकरण रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गया है और लगातार तेजी से बढ़ रहा है। 20 मार्च तक करीब 7 लाख श्रद्धालु चारधाम यात्रा के लिए रजिस्ट्रेशन करा चुके हैं, जिसमें केदारनाथ धाम के लिए सबसे अधिक पंजीकरण हुए हैं। बद्रीनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री के लिए भी बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने आवेदन किया है। बढ़ते पंजीकरण को देखते हुए इस बार यात्रा में पिछले वर्षों के मुकाबले अधिक भीड़ उमड़ने की संभावना जताई जा रही है। प्रशासन भी संभावित भीड़ को देखते हुए व्यवस्थाओं को मजबूत करने और यात्रा मार्गों पर तैयारियां तेज करने में जुट गया है। दिव्य हिमगिरि रिपोर्ट

आस्था, विश्वास और आध्यात्मिक ऊर्जा के सबसे बड़े पर्व चारधाम यात्रा 2026 को लेकर श्रद्धालुओं में इस बार अभूतपूर्व उत्साह देखने को मिल रहा है। यात्रा शुरू होने से पहले ही पंजीकरण के आंकड़े रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गए हैं, जो इस वर्ष भारी संख्या में तीर्थयात्रियों के उत्तराखंड पहुंचने का संकेत दे रहे हैं। देश के विभिन्न राज्यों के साथ-साथ विदेशों से भी श्रद्धालु लगातार रजिस्ट्रेशन करा रहे हैं। 20 मार्च तक करीब 7 लाख श्रद्धालु चारधाम यात्रा के लिए पंजीकरण करा चुके हैं, जिसमें केदारनाथ धाम के लिए सबसे अधिक आवेदन हुए हैं। बद्रीनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री के लिए भी बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने रजिस्ट्रेशन कराया है। बढ़ते आंकड़ों को देखते हुए इस बार चारधाम यात्रा में पिछले वर्षों के मुकाबले रिकॉर्ड भीड़ उमड़ने की संभावना जताई जा रही है, जिसे लेकर धामी सरकार और प्रशासन तैयारियों को अंतिम रूप देने में जुट गया है। राज्य सरकार भी इस बार चारधाम यात्रा को सुरक्षित, सुगम और व्यवस्थित बनाने के लिए व्यापक तैयारियों में जुटी हुई है। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए हैं कि यात्रा के दौरान श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की असुविधा न हो। इसके लिए सड़क, स्वास्थ्य, बिजली, पानी, संचार और सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत किया जा रहा है। संवेदनशील मार्गों पर विशेष निगरानी रखी जा रही है और यात्रा मार्गों पर मरम्मत कार्य तेजी से चल रहे हैं। धामी सरकार ने इस बार यात्रा प्रबंधन को तकनीकी रूप से भी मजबूत करने पर जोर दिया है। ऑनलाइन पंजीकरण व्यवस्था को बेहतर बनाया गया है, जिससे श्रद्धालुओं को स्लॉट के अनुसार यात्रा की अनुमति दी जा सके। इसके साथ

ही भीड़ नियंत्रण के लिए प्रतिदिन सीमित संख्या तय करने की योजना पर भी काम किया जा रहा है। प्रशासन का मानना है कि डिजिटल निगरानी से यात्रा अधिक सुरक्षित और व्यवस्थित रहेगी। चारधाम यात्रा मार्गों पर स्वास्थ्य सुविधाओं को भी प्राथमिकता दी जा रही है। उच्च हिमालयी क्षेत्रों में अस्थायी अस्पताल, मेडिकल रिलीफ पोस्ट और एंबुलेंस की व्यवस्था की जा रही है। गंभीर मरीजों के लिए हेलीकॉप्टर सेवा तैयार रखने के निर्देश दिए गए हैं। केदारनाथ और बद्रीनाथ मार्ग पर विशेष चिकित्सा दल तैनात किए जाएंगे, ताकि ऊंचाई और मौसम से जुड़ी समस्याओं से निपटा जा सके। यात्रा मार्गों पर सुरक्षा व्यवस्था को भी मजबूत किया जा रहा है। पुलिस, एसडीआरएफ और एनडीआरएफ की टीमें संवेदनशील क्षेत्रों में तैनात की जाएंगी। लैंडस्लाइड और खराब मौसम की स्थिति में तुरंत राहत और बचाव कार्य के लिए विशेष योजना तैयार की गई है। इसके साथ ही मौसम विभाग से समन्वय कर लगातार अपडेट लेने के निर्देश दिए गए हैं। पर्यटन विभाग और जिला प्रशासन की ओर से यात्रियों के ठहरने, भोजन और पेयजल की व्यवस्था भी बेहतर करने की योजना बनाई गई है। प्रमुख पड़ावों पर शौचालय, विश्राम स्थल और पार्किंग की सुविधा बढ़ाई जा रही है। स्थानीय व्यापारियों और होटल संचालकों के साथ बैठक कर व्यवस्थाओं को दुरुस्त करने के निर्देश दिए गए हैं। चारधाम यात्रा का प्रदेश की अर्थव्यवस्था पर भी बड़ा असर पड़ता है। होटल, ढाबे, टैक्सी, घोड़ा-खच्चर संचालक और स्थानीय व्यापारियों के लिए यह यात्रा रोजगार का बड़ा अवसर होती है। इस बार बढ़ते पंजीकरण से स्थानीय लोगों में भी उत्साह बढ़ गया है। व्यापारियों को उम्मीद है कि इस बार यात्रा सीजन लंबा और लाभदायक रहेगा। सरकार ने यात्रा को पर्यावरण के लिहाज से भी सुरक्षित बनाने पर जोर दिया है। प्लास्टिक पर प्रतिबंध, कचरा प्रबंधन और स्वच्छता अभियान को सख्ती से लागू करने की तैयारी की जा रही है। यात्रा मार्गों पर सफाई कर्मियों की संख्या बढ़ाई जाएगी और कचरा निस्तारण की व्यवस्था को मजबूत किया जाएगा। चारधाम यात्रा के कपाट खुलने की तिथियों को लेकर भी श्रद्धालुओं में उत्साह बना हुआ है। यमुनोत्री और गंगोत्री धाम के कपाट अप्रैल में अक्षय तृतीया के अवसर पर खुलेंगे, जबकि केदारनाथ और बद्रीनाथ धाम इसके बाद श्रद्धालुओं के लिए खोले जाएंगे। कपाट

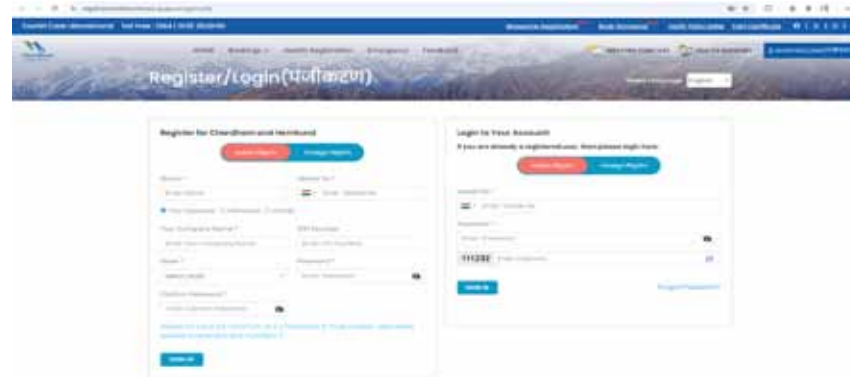

खुलने से पहले मंदिर समितियां और प्रशासन अंतिम तैयारियों में जुटे हुए हैं। श्रद्धालुओं की बढ़ती संख्या को देखते हुए परिवहन व्यवस्था को भी मजबूत किया जा रहा है। रोडवेज बसों की संख्या बढ़ाने, टैक्सी संचालन को सुव्यवस्थित करने और हेलीकॉप्टर सेवा को सुचारु रखने के निर्देश दिए गए हैं। इससे यात्रियों को यात्रा के दौरान सुगम आवागमन मिल सकेगा।

पंजीकरण बढ़ने के साथ प्रशासन अलर्ट, धामों में व्यवस्थाएं विस्तार की तैयारी

चारधाम यात्रा 2026 के लिए तेजी से बढ़ते पंजीकरण के बीच राज्य सरकार और जिला प्रशासन ने धामों में व्यवस्थाओं के विस्तार की तैयारी शुरू कर दी है। श्रद्धालुओं की संभावित भीड़ को देखते हुए बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री धाम में ठहरने, पेयजल, शौचालय और भीड़ प्रबंधन की व्यवस्थाएं बढ़ाई जा रही हैं। विशेष रूप से केदारनाथ धाम में इस बार अतिरिक्त टेंट, प्री-फैब्रिकेटेड आवास और अस्थायी विश्राम स्थलों की संख्या बढ़ाने की योजना पर काम शुरू हो गया है।

पर्यटन विभाग के अनुसार बढ़ते पंजीकरण को देखते हुए यात्रा मार्गों पर पड़ाव स्थलों को भी विकसित किया जा रहा है। सोनप्रयाग, गौरीकुंड, जोशीमठ, हर्षिल और जानकीचट्टी जैसे प्रमुख पड़ावों पर अतिरिक्त सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएंगी। यहां पार्किंग, भोजनालय, चिकित्सा सहायता और विश्राम स्थलों को मजबूत करने के निर्देश दिए गए हैं। इससे यात्रियों को धाम तक पहुंचने में सुगमता मिलेगी। यात्रियों की सुविधा के लिए इस बार पंजीकरण के साथ यात्रा स्लॉट प्रणाली को प्रभावी बनाने पर जोर दिया जा रहा है। प्रशासन का प्रयास है कि प्रतिदिन निर्धारित संख्या में ही श्रद्धालु धामों की ओर रवाना हों, जिससे भीड़ का दबाव कम रहे। इसके लिए ऑनलाइन पंजीकरण के साथ ऑफलाइन जांच केंद्र भी बनाए जाएंगे। चारधाम यात्रा मार्गों पर परिवहन व्यवस्था को भी बेहतर बनाने की तैयारी की जा रही है। रोडवेज और निजी वाहनों के लिए अलग-अलग ट्रैफिक प्लान तैयार किया जा रहा है। संवेदनशील स्थानों पर वन-वे व्यवस्था लागू की जा सकती है। इसके अलावा हेलीकॉप्टर सेवा के लिए भी स्लॉट बढ़ाने पर विचार किया जा रहा है, ताकि बुजुर्ग और अस्वस्थ श्रद्धालुओं को राहत मिल सके। धामों में स्वच्छता व्यवस्था को लेकर भी इस बार विशेष अभियान चलाया जाएगा। नगर पंचायतों और ग्राम पंचायतों को साफ-सफाई की जिम्मेदारी दी गई है। कचरा प्रबंधन के लिए अतिरिक्त डंपिंग पॉइंट बनाए जाएंगे और प्लास्टिक प्रतिबंध को सख्ती से लागू किया जाएगा। प्रशासन ने यात्रा मार्गों पर स्वयंसेवी संस्थाओं की मदद लेने की भी योजना बनाई है। स्थानीय व्यापारियों और होटल संचालकों के साथ बैठक कर व्यवस्थाओं को दुरुस्त करने के निर्देश दिए गए हैं। यात्रियों से अधिक शुल्क न वसूला जाए, इसके लिए दर सूची जारी करने की तैयारी है। साथ ही घोड़ा-खच्चर और पालकी संचालकों का पंजीकरण भी अनिवार्य किया जाएगा। चारधाम यात्रा से जुड़े जिलों में कंट्रोल रूम स्थापित किए जा रहे हैं, जहां से यात्रियों को मौसम, ट्रैफिक और अन्य जरूरी जानकारी उपलब्ध कराई जाएगी। इसके अलावा हेल्पलाइन नंबर भी जारी किए जाएंगे, ताकि श्रद्धालु यात्रा से पहले और दौरान जानकारी ले सकें। तेजी से बढ़ते पंजीकरण और विस्तारित व्यवस्थाओं को देखते हुए प्रशासन को उम्मीद है कि इस बार चारधाम यात्रा सुगम और व्यवस्थित रहेगी। जैसे-जैसे कपाट खुलने की तिथि नजदीक आ रही है, धामों में तैयारियां भी तेज हो गई हैं और उत्तराखंड एक बार फिर लाखों श्रद्धालुओं के स्वागत के लिए तैयार होता नजर आ रहा है।

चिकित्सा को हमेशा समाजसेवा का माध्यम माना है

एक मध्यमवर्गीय परिवार में जन्मे डॉ. आनंद गोयल अपने परिवार में पहले ऐसे व्यक्ति है जिन्होंने सर्विस क्लास से हटकर चिकित्सा के क्षेत्र में अपना करियर बनाया। मुंबई हाई, अपर असम और ओएनजीसी से आर्थोपेडिक्स सर्जन के रूप में शुरू हुआ सफर आज भी अनवरत जारी है। उनके इसी सफर के बारे में दिव्य हिमगिरी के लिए लोकेश राज अस्थाना ने उनसे बातचीत की। पेश है बातचीत के अंश

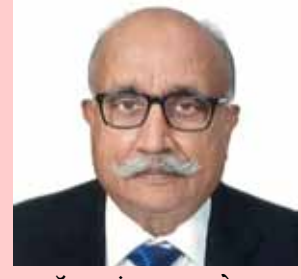

डॉ. आनंद कुमार गोयल
एमबीबीएस, एमएस (ऑर्थोपेडिक्स), एफएआईएसएफ (जर्मनी), पीजीडीएचएचएम एचओडी, हडडी रोग विभाग, गौतम बुद्ध चिकित्सा महाविद्यालय देहरादून

अपनी पारिवारिक और शैक्षणिक पृष्ठभूमि के बारे में बताएं।

मेरा जन्म देहरादून (अविभाजित उत्तर प्रदेश) के एक मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ है तथा स्कूली शिक्षा जोधपुर (राजस्थान) से पूरी हुई क्योंकि पिता ओएनजीसी में कार्यरत थे जिस कारण सर्विस का एक लम्बा समय हमने जोधपुर में ही व्यतीत किया। वर्ष 1982 में मेरठ मेडिकल कॉलेज, मेरठ (उत्तर प्रदेश) से ऑर्थोपेडिक्स में एमएस की डिग्री पूर्ण की। ऑर्थोपेडिक्स में मेरा करियर लंबा रहा है जिसमें जर्मनी और एडिनबर्ग विश्वविद्यालय (यूके) से ऑर्थोपेडिक्स में फेलोशिप एवं क्लिनिकल अटैचमेंट, अस्पताल प्रबंधन में पीजी और एमडीआई गुड़गांव से प्रबंधन पाठ्यक्रम शामिल हैं जिसमें वियना, एंटवर्प और पेरिस में विदेशी प्रशिक्षण भी शामिल है। एक दयालु चिकित्सक, कुशल सर्जन और प्रभावी शिक्षक के रूप में अपनी पहचान बनाई है जिनमें मजबूत नैदानिक, शिक्षण और मानव संसाधन प्रबंधन कौशल हैं।

किसकी प्रेणा से चिकित्सा के क्षेत्र में आना हुआ?

एक पारंपरिक परिवार से होने के कारण मैं अपने परिवार में पहला ऐसा व्यक्ति था जिसने पेशेवर चिकित्सा को अपना करियर चुना था। पिता के शिक्षा का स्तर साधारण था लेकिन उन्होंने पूरे मनोभाव से मुझे इस क्षेत्र में आने के लिए प्रोत्साहित किया। वे दूसरों के स्वास्थ्य और कल्याण में गहरी रूचि रखते थे जिसका सीधा असर मेरे व्यक्तिव पर भी पड़ा।

आपकी उपलब्धियों में बारे में बताईये।

मैंने मुंबई हाई, अपर असम और देहरादून में ओएनजीसी में ऑर्थोपेडिक सर्जन के रूप में कार्य किया। मेरे द्वारा ओएनजीसी अस्पताल देहरादून में अत्याधुनिक ऑर्थोपेडिक सर्जरी और फिजियोथेरेपी की सुविधाएं विकसित कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई गई और मैं ओएनजीसी मेडिकल सर्विसेज के प्रमुख (देश प्रमुख) के प्रतिष्ठित पद तक पहुंचा। हालांकि ओएनजीसी की रेफरल प्रणाली उदार है लेकिन इसके बावजूद अस्थि रोगियों का ईलाज ओएनजीसी अस्पताल में ही किया जाता था।

वर्ष 2016 में ओएनजीसी से रिटायरमेंट लेने के बाद सुभारती मेडिकल कॉलेज देहरादून में आर्थोपेडिक्स विभाग में कार्यभार संभाला और तब से अब तक आर्थोपेडिक्स विभाग के प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष के रूप में कार्यरत हूँ। मेरे द्वारा सभी प्रकार की ऑर्थोपेडिक चोटों और विकारों का इलाज किया जाता है जिसमें फ्रैक्चर फिक्सेशन, जॉइंट रिप्लेसमेंट और आर्थोस्कोपिक सर्जरी जैसी उन्नत सर्जरी भी शामिल है। मुझे स्नातक और स्नातकोत्तर छात्रों को पढ़ाने में गहरी रुचि है और कई वैज्ञानिक पत्रिकाओं में मेरे शोध पत्र भी प्रकाशित हुए है। बीच के कुछ वर्षों (2020 से 2022) तक उत्तराखंड राज्य स्वास्थ्य प्राधिकरण, देहरादून में निदेशक के रूप में संतोषजनक कार्य किया जहां अपने निर्देशन में आयुष्मान जन आरोग्य योजना का प्रबंधन किया।

विभिन्न चिकित्सा एवं अस्थि चिकित्सा संघों में सक्रिय रूप से कार्यरत रहा हूँ। 1993-94 में भारतीय चिकित्सा संघ के अध्यक्ष का पद संभाला और आज तक इस पद पर रहने वाला सबसे युवा व्यक्ति हूँ। 2001 में राज्य अस्थि चिकित्सा संघ की स्थापना में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और इसके आरंभिक वर्षों में अध्यक्ष का पद संभाला। स्नातकोत्तर काल में मुझे सर्वश्रेष्ठ छात्र और ओएनजीसी में सर्वश्रेष्ठ डॉक्टर के पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

चिकित्सा के क्षेत्र में आपका कोई यादगार अनुभव।

ओएनजीसी के अपतटीय रिग्स पर अपनी तैनाती के दौरान तत्काल ऑनसाइट गंभीर चिकित्सा देखभाल की व्यवस्था की और गुजरात के ड्रील साइट से ब्लो-आउट के कई गंभीर रूप से झुलसे पीड़ितों को मुंबई के विशेष अस्पताल में पहुंचाने की व्यवस्था कराई गई जिससे इनमें से अधिकांश मरीज ठीक हो सके और आज अपने नियमित क्षेत्रीय कर्तव्यों का सही प्रकार से निवर्हन कर रहे है। वर्ष 2001 में भूकंप के बाद गुजरात के भुज में भी एक टीम का नेतृत्व किया और सबसे अधिक प्रभावित क्षेत्रों में चिकित्सा और शल्य चिकित्सा उपचार प्रदान किया।

कोविड महामारी के दौरान जब अस्पतालों में बिस्तरों की व्यापक कमी थी और आयुष्मान योजना के लाभार्थियों से निर्धारित मुफ्त उपचार के बजाय विभिन्न अस्पतालों द्वारा भारी शुल्क लिया जा रहा था तब उत्तराखंड राज्य स्वास्थ्य प्राधिकरण, देहरादून के निदेशक के रूप में मेरे द्वारा ऐसी सभी शिकायतों को संकलित कराया गया और राज्य के विभिन्न अस्पतालों से करीब 500 परिवारों को उनकी बकाया लगभग 5 करोड़ रूपये की धनराशि वापस दिलाई गई।

वर्ष 1989 और 1996 में देहरादून में सर्जिकल कार्यशालाओं का आयोजन कराया गया ताकि स्थानीय अस्थि शल्य चिकित्सकों को आर्थोस्कोपिक सर्जरी और टोटल जॉइंट रिप्लेसमेंट सर्जरी से प्रशिक्षित किया जा सके।

दिव्य हिमगिरी के पाठकों के नाम क्या संदेश देना चाहेंगे?

सुरक्षित रूप से गाड़ी चलाएं, यातायात नियमों का पालन करें और हेलमेट पहनें, क्योंकि सड़क दुर्घटनाओं में कई युवा और सक्षम जिंदगियां छिन जाती हैं। हमारे यहां इलाज किए जाने वाले आधे से अधिक मामले सड़क दुर्घटनाओं के कारण होते हैं। इसके अलावा, गतिशीलता ही जीवन है। स्वस्थ जीवनशैली अपनाएं, सही खान-पान अपनाएं और अपनी दिनचर्या में पैदल चलना, हल्का व्यायाम या बाहरी खेल शामिल करें।

मंत्रिमंडल में नए चेहरों के साथ नई रणनीति

शंभू नाथ गौतम
वरिष्ठ पत्रकार

नवरात्र के शुभ अवसर पर मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने मंत्रिमंडल विस्तार कर नए चेहरों के साथ नई राजनीतिक रणनीति का स्पष्ट संकेत दिया है। लंबे समय से चल रही अटकलों के बीच हुए इस विस्तार में पांच विधायकों को मंत्रिपरिषद में शामिल कर क्षेत्रीय और सामाजिक संतुलन साधने की कोशिश की गई है। सरकार ने अनुभव, संगठनात्मक पकड़ और राजनीतिक प्रभाव वाले नेताओं को जगह देकर आगामी चुनावी चुनौतियों को ध्यान में रखा है। इसे प्रशासनिक मजबूती के साथ-साथ सियासी संदेश के रूप में भी देखा जा रहा है। नए मंत्रियों की एंट्री से सरकार में नई ऊर्जा आने की उम्मीद जताई जा रही है, वहीं पार्टी संगठन को भी मजबूती मिलने के संकेत हैं। इस कदम ने राजनीतिक हलकों में नई चर्चा को जन्म दे दिया है और आने वाले समय में सरकार की रणनीति पर सबकी नजरें टिक गई हैं।

उत्तराखंड की राजनीति में शुक्रवार का दिन कई मायनों में बेहद अहम साबित हुआ। नवरात्र के पावन अवसर पर मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने अपने मंत्रिमंडल का विस्तार करते हुए एक ऐसा राजनीतिक संदेश दिया, जिसने सियासी हलकों में हलचल तेज कर दी। सुबह करीब 10 बजे देहरादून स्थित लोकभवन में आयोजित भव्य शपथ ग्रहण समारोह में पांच नए चेहरों को कैबिनेट में शामिल किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत गरिमामय वातावरण में हुई, जहां राज्यपाल गुरमीत सिंह (सेनि.) ने नवनियुक्त मंत्रियों को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। सबसे पहले राजपुर से विधायक खजान दास ने शपथ ली, जिसके बाद भरत सिंह चौधरी ने संस्कृत में शपथ लेकर समारोह को एक अलग ही आयाम दिया। यह क्षण वहां मौजूद सभी लोगों के लिए खास बन गया और पारंपरिक संस्कृति की झलक भी देखने को मिली। इसके बाद वरिष्ठ नेता मदन कौशिक, प्रदीप बत्रा और राम सिंह कैड़ा ने भी मंत्रिपद की शपथ ग्रहण की। समारोह में मुख्यमंत्री धामी के अलावा कई वरिष्ठ मंत्री, विधायक, पार्टी पदाधिकारी और प्रशासनिक अधिकारी मौजूद रहे। कार्यक्रम के दौरान भाजपा कार्यकर्ताओं में खासा उत्साह देखने को मिला, जो इस विस्तार को पार्टी के लिए एक नई शुरुआत के रूप में देख रहे थे। राजनीतिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो यह कैबिनेट विस्तार महज एक औपचारिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि एक सोची-समझी रणनीति का हिस्सा प्रतीत होता है। आगामी चुनावों को ध्यान में रखते हुए पार्टी ने क्षेत्रीय और सामाजिक संतुलन साधने की कोशिश की है। लंबे समय से यह कयास लगाए जा रहे थे कि धामी सरकार अपने मंत्रिमंडल में बदलाव कर सकती है, और नवरात्र के शुभ अवसर पर इस निर्णय को अमलीजामा पहनाकर सरकार ने एक सकारात्मक संदेश देने की कोशिश की है। मंत्रिमंडल में नए चेहरों के साथ नई रणनीति के तहत अब धामी सरकार ने साफ संकेत दिया है कि वह सिर्फ राजनीतिक संतुलन तक सीमित नहीं रहना चाहती, बल्कि प्रशासनिक प्रदर्शन को भी नई दिशा देने की तैयारी में है। नए मंत्रियों को शामिल कर सरकार ने एक ओर जहां संगठन को साधने का प्रयास किया है, वहीं दूसरी ओर विभिन्न क्षेत्रों में विकास कार्यों को गति देने का रोडमैप भी तैयार किया जा रहा है। इस विस्तार के बाद सरकार की प्राथमिकताओं में बुनियादी ढांचे का विकास, निवेश को बढ़ावा, पर्यटन सेक्टर का विस्तार और रोजगार सृजन जैसे मुद्दे प्रमुख रूप से सामने आ रहे हैं। खासतौर पर चारधाम यात्रा, औद्योगिक निवेश और शहरी विकास को लेकर सरकार तेजी दिखाने के संकेत दे रही है। माना जा रहा है कि नए मंत्रियों को उनके क्षेत्रीय प्रभाव और अनुभव के आधार पर अहम जिम्मेदारियां दी जा सकती हैं, जिससे सरकार की कार्यक्षमता बढ़े। यह विस्तार सीधे तौर पर आगामी चुनावों की रणनीति से जुड़ा हुआ है। भाजपा ने इस कदम के जरिए जातीय और क्षेत्रीय

समीकरणों को साधने की कोशिश की है, ताकि विभिन्न वर्गों में संतुलन बनाया जा सके। देहरादून, हरिद्वार और अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्रों को प्रतिनिधित्व देकर पार्टी ने अपने मजबूत वोट बैंक को और सुदृढ़ करने का प्रयास किया है।

इसके साथ ही यह भी संकेत मिला है कि पार्टी नेतृत्व अब पूरी तरह चुनावी मोड में आ चुका है। संगठन और सरकार के बीच बेहतर तालमेल बनाकर जमीनी स्तर पर पकड़ मजबूत करने की रणनीति पर काम किया जा रहा है। आने वाले महीनों में जनसंपर्क अभियान, विकास योजनाओं की समीक्षा और नए प्रोजेक्ट्स की घोषणा देखने को मिल सकती है।

नई टीम से नई रफ्तार या सियासी संतुलन?

कैबिनेट विस्तार के बाद अब सबसे बड़ा सवाल यही है कि क्या यह बदलाव केवल राजनीतिक समीकरण साधने तक सीमित रहेगा या वास्तव में प्रदेश के विकास को नई गति देगा। जानकारों का मानना है कि धामी सरकार इस नए मंत्रिमंडल के जरिए प्रशासनिक कामकाज में तेजी लाने की कोशिश करेगी। प्रदेश में लंबे समय से जिन मुद्दों पर चर्चा हो रही है। जैसे सड़क, स्वास्थ्य, शिक्षा, पर्यटन और रोजगार, उन पर अब तेजी से फैसले लेने की उम्मीद जताई जा रही है। नए मंत्रियों के सामने सबसे बड़ी चुनौती यही होगी कि वे अपने-अपने विभागों में परिणाम देकर सरकार की छवि को मजबूत करें। इसके अलावा, यह विस्तार सामाजिक संतुलन के लिहाज से भी अहम माना जा रहा है। विभिन्न वर्गों और क्षेत्रों को प्रतिनिधित्व देकर भाजपा ने यह संदेश देने की कोशिश की है कि सरकार सभी को साथ लेकर चलने के लिए प्रतिबद्ध है। यह रणनीति आगामी चुनावों में पार्टी के लिए निर्णायक साबित हो सकती है। नवरात्र के दौरान इस तरह का फैसला लेना भी एक प्रतीकात्मक संदेश के रूप में देखा जा रहा है। इसे सकारात्मक ऊर्जा, नए आरंभ और जनविश्वास से जोड़कर देखा जा रहा है। सरकार इस मौके का उपयोग एक सकारात्मक राजनीतिक माहौल बनाने के लिए भी कर सकती है। फिलहाल, इस कैबिनेट विस्तार ने उत्तराखंड की राजनीति में नई हलचल जरूर पैदा कर दी है। अब नजर इस बात पर टिकी है कि नई टीम के साथ धामी सरकार अपने कामकाज में कितनी तेजी लाती है और यह रणनीति चुनावी मैदान में कितना असर दिखाती है।

शपथ के बाद नए मंत्रियों ने बताई प्राथमिकताएं

उत्तराखंड में कैबिनेट विस्तार के बाद लोकभवन में आयोजित शपथ ग्रहण समारोह के अगले दिन शुक्रवार को नए मंत्रियों ने अपनी प्राथमिकताएं स्पष्ट कीं। राजपुर विधायक और मंत्री बने खजान दास ने कहा कि देवभूमि उत्तराखंड की जनता की अपेक्षाओं पर खरा उतरना उनकी पहली जिम्मेदारी होगी। उन्होंने कहा कि प्रदेश हित में काम करते हुए जनता की समस्याओं का समाधान किया जाएगा और 2027 में भाजपा फिर जीत हासिल कर हैट्रिक बनाएगी। नवनियुक्त मंत्री राम सिंह कैड़ा ने मुख्यमंत्री के भरोसे पर खरा उतरने का आश्वासन दिया। उन्होंने कहा कि प्रदेश की जनता प्रधानमंत्री, भाजपा और मुख्यमंत्री पर विश्वास करती है और वे पूरी ईमानदारी के साथ जनता की उम्मीदों को पूरा करने का प्रयास करेंगे।

वहीं, भरत सिंह चौधरी ने जनसेवा को अपनी पहली प्राथमिकता बताते हुए कहा कि वे अपने विभाग की जिम्मेदारियों को समझते हुए पूरे प्रदेश का अध्ययन करेंगे और जहां समस्याएं होंगी, उनके समाधान के लिए काम करेंगे। मंत्री पद की शपथ लेने के बाद मदन कौशिक ने कहा कि उन्होंने हमेशा पार्टी कार्यकर्ता के रूप में जिम्मेदारियां निभाई हैं और अब मंत्री के रूप में भी पूरी निष्ठा के साथ राज्य के विकास के लिए काम करेंगे।

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने नए मंत्रियों को बधाई देते हुए कहा कि मंत्रिपरिषद के सभी रिक्त पद भर दिए गए हैं और सरकार समग्र विकास के लक्ष्य के साथ आगे बढ़ेगी। इस बीच भाजपा प्रदेश अध्यक्ष महेंद्र भट्ट ने भी बड़ा राजनीतिक संकेत देते हुए कहा कि हल्द्वानी में होने वाले कार्यक्रम से 2027 के चुनाव अभियान का आगाज किया जाएगा और नए मंत्री पार्टी के लिए विजय का मार्ग प्रशस्त करेंगे।

धामी कैबिनेट में लंबे इंतजार के बाद हुआ विस्तार

उत्तराखंड में लंबे समय से टल रहा धामी सरकार का मंत्रिमंडल विस्तार आखिरकार 20 मार्च को हो गया। कई दिनों से चल रही सियासी अटकलों और चर्चाओं के बीच मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने अपने मंत्रिमंडल में पांच नए चेहरों को शामिल कर राजनीतिक समीकरणों को साधने की कोशिश की है। देहरादून स्थित लोकभवन में आयोजित शपथ ग्रहण समारोह में राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह (से.नि.) ने नए मंत्रियों को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। कैबिनेट में खजान दास, मदन कौशिक, प्रदीप बत्रा, भरत सिंह चौधरी और राम सिंह कैड़ा को मंत्रिपरिषद में जगह दी गई है। लंबे समय से मंत्रिमंडल विस्तार को लेकर चर्चा चल रही थी, लेकिन संगठनात्मक संतुलन, क्षेत्रीय प्रतिनिधित्व और राजनीतिक समीकरणों को लेकर फैसला टलता रहा। आखिरकार नवरात्र के दौरान हुए इस विस्तार को सरकार का अहम राजनीतिक कदम माना जा रहा है। इस विस्तार के जरिए भाजपा ने प्रदेश के अलग-अलग क्षेत्रों और वर्गों को साधने का प्रयास किया है। अनुभवी और संगठनात्मक पकड़ रखने वाले नेताओं को शामिल कर सरकार ने प्रशासनिक मजबूती का भी संकेत दिया है। माना जा रहा है कि नए मंत्रियों को जल्द ही विभागों का बंटवारा किया जाएगा, जिसके बाद सरकार विकास योजनाओं को तेज करने की दिशा में आगे बढ़ेगी। कैबिनेट विस्तार से धामी सरकार को नई ऊर्जा मिलेगी और आगामी चुनावों को देखते हुए संगठन और सरकार के बीच तालमेल मजबूत होगा। वहीं, नए मंत्रियों के सामने जनता की अपेक्षाओं पर खरा उतरने और अपने-अपने क्षेत्रों में विकास को गति देने की चुनौती भी रहेगी।

एक माह तक अल्लाह की इबादत का प्रतिफल है ईद!

डॉ. श्रीगोपालनारसन एडवोकेट

रमजान के सकुशल बीतने की खुशी में ही अल्लाह को शुक्रिया अदा करने के लिए ही ईद उल फितर का त्यौहार मनाया जाता है। वही अल्लाह के नेक बन्दो की खिदमत का भी मुबारक मौका है ईद। ईद पर कोई भूखा न रहे, पडौसी के घर में भी ईद की खुशिया मने और आपसी मोहब्बत व भाईचारे की नई

शुरूआत हो यही कौशिश हर किसी की रहती है। तभी तो ईद की सवेरे से ही ईद की खुशिया सब पर हावी हो जाती है। बडे सवेरे से घर में सेवईया बननी शुरू हो जाती है। एक माह तक रोजा रख चुके लोग नये नये कपडे पहनकर ईद की नमाज अदा करने के लिए ईदगाह जाते है। ईदगाह में नमाज के बाद एक दूसरे के गले मिलकर ईद की मुबारकबाद दी जाती है। बच्चे नये नये खिलौने खरीदते है। सेवईया और तरह तरह के पकवान खाये जाते है। ईद पर भी गरीबो को दान देने, उनकी सहायता करने की खास परम्परा है। ताकि हर किसी के चेहरे पर ईद की खुशिया बरकरार रहे। रमजान सब्र, प्रेम और भाईचारे के साथ साथ अल्लाह की

खिदमत का एक खास महिना है। तभी तो इस्लाम धर्म को मानने वाला हर मुस्लमान रमजान का बेसब्री से इन्तजार करता है। रमजान शुरू होते है तो हर रोजेदार की दिनचर्या बदल जाती है। बडे सवेरे उठना और अल्लाह को याद करने के साथ ही पांचो वक्त की नमाज रोजेदार को अल्लाह की इबादत का मौका दिलाती है। रमजान की शुरूआत भी चांद से ही होती है और रमजान पूरे होने पर ईद का जब चांद निकलता है तो सबके चेहरे पर खुशी छा जाती है। इस्लामी कलैण्डर के दसवें महिने की पहली तारीख को चांद दिखने व तीस रोजे निर्विधन खुदा की इबादत के साथ पूरे होने की खुशी में ईद उल फितर मनाया जाता है। ईद उल फितर की शुरूआत जगं एबदर के बाद सन 624 ईसवी के पैगम्बर मौहम्मद साहब द्वारा ईद उल फितर मनाने से मनाने से हुई थी। रमजान के इस महिने में हर मुस्लमान जंहा ज्यादा से ज्यादा समय अल्लाह की रहमत

में गुजारना चाहता है। वही वह स्वयं को सुधारने व खुदा के बन्दो के चेहरो पर रौनक लाने के लिए उनके हर गम में शरीक होता है। जो खुदा के बन्दे पैसो से मोहताज है, भूखे है, लाचार है उनकी हर हाल में मदद कर उन्हे बराबरी पर लाने की कौशिश की जाती है। इस्लाम में हर शख्स को रोजाना ही शरीर और दिमाग से पाक साफ रहने की हिदायत है। लेकिन रमजान के महिने में हर दिन विशेष तौर पर पाक साफ रहने की बात कही गई है ताकि रोजेदार हर तरह के गुनाहो से दूर रहे। आपसी भाईचारे से रहना सीखे। खुदा की इबादत करे। नेकी करे लेकिन ईद उल फितर की खुशी के मौके पर कैसे हो दिन की शुरूआत यह भी इस्लाम में बताया गया है। इस्लाम धर्म के विद्वान बताते है कि ईद उल फितर के दिन की शुरूआत फजर की नमाज के साथ होती है। रमजान में तीस दिनो तक रोजा रख चुके रोजेदारो एवं उनको भी जो बीमारी या फिर किसी अन्य वजह से रोजा नही रख पाए, को मिस्वाक दातून करने के बाद गुसल यानि नहाना चाहिए। फिर साफ कपडे पहनकर कपडो पर इतर की खुशबू के साथ कुछ खाकर ईदगाह जाना चाहिए। ध्यान रहे ईद की नमाज से पहले फितरा और जकात की जरूरी रस्म नही भूलनी चाहिए। यही वह रस्म है जो गरीब और मोहताज पडौसी के चेहरे पर सहायता की रौनक लाती है। इस्लाम मानता है कि मनुष्य में वासनाएं, इच्छाएं, और भावनाएं प्राकृतिक रूप से समाहित है इसी कारण उसके स्वभाव में तेजी, उत्तेजना और जोश होता है। जिसे समाप्त या फिर कम करने के

लिए ही रमजान में रोजो की व्यवस्था की गई है। ताकि मनुष्य अल्लाह को याद करने के साथ साथ अपने अन्दर की बुराईयों को दूर करते हुए आत्म चिंतन करना सीखे और एक अच्छे भले इंसान के रूप में अपने

जीवन का यापन करे। वैसे तो इस्लाम में हर रोज पांच वक्त की नमाज पढने की हिदायत दी गई है। लेकिन रमजान के दिनो में हर रोजेदार अल्लाह के करीब होता है इसलिए पांचो वक्त की नमाज पढना वह अपना फर्ज समझता है। रोजा रखने से जहां पेट बिलकुल ठीक रहता है और शरीर का शुद्धिकरण हो जाता है। वही पांचो वक्त की नमाज पढने से उसकी योगिक क्रियाएं भी हो जाती है। नमाज की शरीरिक स्थिति इस तरह की होती है कि सभी तरह के आसन और प्राणायाम अल्लाह की इबादत में पूरे हो जाते है। ईदगाह में ईद की नमाज अदा करते समय तकबीर पढे,अल्लाह हु अकबर अल्लाह हु अकबर लाईलाह इल्लाह अल्लाह हु अकबर बडा है अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक नही। सारी तारीफे अल्लाह के लिए है। ईदगाह की नमाज अदा करने के बाद एक दूसरे को ईद की बधाई देने व लेने में जो खुशी मिलती है उसको जरूर प्राप्त करना चाहिए। ईद की बधाई में सिर्फ मुस्लमान ही नही हिन्दू, सिख और ईसाइ भी शरीक होते है। यह वह त्योहार है जो हमे इंसानियत की सीख देता है। जो दूसरो की भलाई का जज्बा देता है और मुल्क की तरक्की व हिफाजत का जुनून देता है। ईद की खुशी रोजेदारो को तभी से मिलनी शुरू हो जाती है। जब रमजान में रोजेदार मुस्लमानो के साथ साथ दूसरे धर्मो से जुडे लोग भी रोजा इफतार की रस्म में शरीक होकर आपसी भाईचारे व एकता का पैगाम देते है। हमे केवल ओर केवल धार्मिक भावना के तहत ही रोजा इफतारी कराकर रोजेदारो की खिदमत करनी चाहिए और ईद पर भी उन्हे तहेदिल से गले

लगाना चाहिए। तभी ईद का मजा दोगुना हो सकता है और ईद से नई उम्मीदो, नईरोशनी व नये रिश्तो की शुरूआत हो सकती है।

(लेखक आध्यात्मिक चिंतक व वरिष्ठ पत्रकार है)

इंसानियत का पैगाम है ईद
भाईचारे का एक सबूत है ईद
रमजान के सब्र का पैमाना है ईद
बेहद की खुशियों का खजाना है ईद
इंसानी रिश्तों को जोड़ती है ईद
नफरत की दीवारो को तोड़ती है ईद
चांद ए दीदार पर आती है ईद
रमजान के बाद की खुशबू है ईद
रोजो की बरकत का नाम है ईद
खुशियों को बांटने का अवसर है ईद
नफरते भुलाने का बहाना है ईद।

भारतीय नव वर्ष का शुभारंभ सनातनी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से मनाया जाता है

डॉ. हरीश चन्द्र अन्डोला

भारत में विक्रम संवत के आधार पर बनाया गया पंचांग प्रयुक्त होता है। इसके आधार पर ही हिंदू धर्म के त्योहार और तिथियों का निर्धारण होता है। विक्रम संवत हमारे ऋतुचक्र से भी जुड़ा हुआ है। इस समय वसंत की शुरुआत होती है। प्रकृति में नए रंगों से खिल जाती है। पेड़ों में नए पत्ते आते हैं। इसी नवागमन के साथ विक्रम संवत की भी शुरुआत होती है। खास बात यह है कि इसे ऋषि मुनियों ने समावेशी तरीके से तैयार किया है इसलिए यह व्यक्ति विशेष से चलायमान नहीं है। नवसंवत्सर की पूजा का महत्व है। हिंदू धर्म में हर मांगलिक और धार्मिक कार्य में संवत के नाम का प्रयोग किया जाता है। संवत्सर की प्रतिमा स्थापित करके उसकी पूजा करने का भी महत्व है। संवत्सर से आने वाला साल सुखमय होने और सभी दुख-परेशानियां, अनिष्ट दूर करने की प्रार्थना की जाती है। विक्रम संवत भारत के सबसे प्राचीन और सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण पंचांगों में से एक है, जिसका उपयोग हिंदू समुदाय में धार्मिक त्योहारों, कृषि गतिविधियों और सांस्कृतिक समारोहों की महत्वपूर्ण तिथियों को निर्धारित करने के लिए व्यापक रूप से किया जाता है। भारतीय विरासत से अपने गहरे जुड़ाव के लिए प्रसिद्ध, यह पंचांग भारतीय उपमहाद्वीप के समृद्ध इतिहास का प्रमाण है और सदियों से लाखों लोगों के जीवन में इसका महत्वपूर्ण स्थान रहा है विक्रम संवत पंचांग 57 ईसा पूर्व का है और इसकी स्थापना उज्जैन के महान भारतीय राजा विक्रमादित्य ने की थी। लोक कथाओं के अनुसार, राजा विक्रमादित्य ने अपने राज्य पर आक्रमण करने वाले शक शासकों को परास्त किया था और उनकी इस विजय की स्मृति में एक पंचांग की स्थापना की गई थी। इस पंचांग का नाम वीरता, न्याय और ज्ञान के प्रतीक राजा विक्रमादित्य के सम्मान में रखा गया है, जिनके शासनकाल को भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग माना जाता है। विक्रम संवत कैलेंडर की उत्पत्ति हिंदू पौराणिक कथाओं और ब्रह्मांडीय चक्रों में विश्वास से गहराई से जुड़ी हुई है। ग्रेगोरियन कैलेंडर, जो सौर चक्र पर आधारित है, के विपरीत, विक्रम संवत एक चंद्र-सौर कैलेंडर है, जिसका अर्थ है कि इसमें चंद्रमा और सूर्य दोनों की गतियों को शामिल किया गया है। यह अनूठा संयोजन कैलेंडर को चंद्रमा और सूर्य की प्राकृतिक लय को ध्यान में रखने में सक्षम बनाता है, जिससे यह कृषि पद्धतियों और सांस्कृतिक अनुष्ठानों के लिए अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है।विक्रम संवत पंचांग की शुरुआत, 57 ईसा पूर्व, भारतीय इतिहास में एक नए युग की आरंभिक तिथि है, जो साहित्य, विज्ञान, कला और संस्कृति के उत्कर्ष से परिपूर्ण है। वर्षों से, क्षेत्रीय विविधताओं को ध्यान में रखते हुए पंचांग में बदलाव हुए हैं और यह विश्वभर के हिंदुओं के लिए एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक प्रतीक बन गया है। विक्रम संवत पंचांग चंद्र माह पर आधारित है, लेकिन यह सौर वर्ष के साथ समकालिक है, इसलिए इसे चंद्र-सौर पंचांग कहा जाता है। इसमें 12 चंद्र माह होते हैं, जिनमें से प्रत्येक की शुरुआत अमावस्या से होती है। चंद्र माह को दो पखवाड़ों में विभाजित किया गया है: शुक्ल पक्ष (चंद्रमा का बढ़ता चरण) और कृष्ण पक्ष (चंद्रमा का घटता चरण)। इनमें से प्रत्येक चरण लगभग 15 दिनों का होता है, जिससे एक माह में कुल 30 दिन होते हैं। विक्रम संवत पंचांग में एक वर्ष में 354 दिन होते हैं, जो सौर वर्ष के 365 दिनों से 11 दिन कम है। इस अंतर को पाटने और पंचांग को सौर वर्ष के अनुरूप बनाने के लिए, प्रत्येक कुछ वर्षों में अधिक मास नामक एक अतिरिक्त माह जोड़ा जाता है। यह समायोजन सुनिश्चित करता है कि पंचांग बदलते मौसमों के साथ तालमेल बनाए रखे और कृषि गतिविधियों के लिए उपयुक्त हो। विक्रम संवत पंचांग के अनुसार, हिंदू नव वर्ष चैत्र महीने से शुरू होता है , जो आमतौर पर मार्च या अप्रैल में पड़ता है। भारत के विभिन्न हिस्सों में हिंदू नव वर्ष को बड़े उत्साह और उमंग के साथ मनाया जाता है और इसे विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग नामों से जाना जाता है। महाराष्ट्र में इसे गुड़ी पड़वा के रूप में मनाया जाता है, जबकि कर्नाटक और आंध्र प्रदेश में इसे उगादी के नाम से जाना जाता राजस्थान और गुजरात में इसे थपना या वर्षा प्रतिपदा कहा जाता है। महाराष्ट्र में नव वर्ष की शुरुआत गुड़ी (कपड़े और बर्तन से सजा हुआ एक खंभा) लगाने से होती है, जो विजय और समृद्धि का प्रतीक है। लोग अपने घरों की सफाई करते हैं, नए कपड़े पहनते हैं, विशेष पकवान बनाते हैं और नव वर्ष का स्वागत करने के लिए रीति-रिवाजों और प्रार्थनाओं में भाग लेते हैं। यह त्योहार लोगों को बीते वर्ष पर विचार करने, नए लक्ष्य निर्धारित करने और स्वास्थ्य, सुख और समृद्धि के लिए आशीर्वाद प्राप्त करने का अवसर भी प्रदान करता है।विक्रम संवत 2080 वर्तमान हिंदू नव वर्ष का प्रतीक है, जिसे विभिन्न रीति-रिवाजों, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों और धार्मिक समारोहों के साथ मनाया जाता है। यह पारिवारिक मिलन, सामूहिक प्रार्थना और प्रियजनों के बीच शुभकामनाओं और सद्भावनाओं के आदान-प्रदान का समय है।आधुनिक युग में, आधिकारिक और व्यावसायिक उद्देश्यों

के लिए ग्रेगोरियन कैलेंडर के व्यापक उपयोग के बावजूद, विक्रम संवत लाखों लोगों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण बना हुआ है। यह कैलेंडर भारत की सांस्कृतिक विरासत से जुड़ाव का माध्यम है और इसका पालन करने वालों को पहचान और निरंतरता का बोध कराता है। विक्रम संवत पारंपरिक ज्ञान और प्रथाओं को संरक्षित करने का एक महत्वपूर्ण साधन भी है। मानव गतिविधियों को प्राकृतिक चक्रों के साथ जोड़कर, यह कैलेंडर पर्यावरण के अनुकूल एक सतत जीवनशैली को बढ़ावा देता है। यह बात आज विशेष रूप से प्रासंगिक है, क्योंकि दुनिया जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण क्षरण जैसी चुनौतियों से जूझ रही है। इसके अतिरिक्त, विक्रम संवत कैलेंडर सामुदायिक एकता और सांस्कृतिक सामंजस्य को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस कैलेंडर के आधार पर मनाए जाने वाले त्योहार, धार्मिक अनुष्ठान और कृषि गतिविधियाँ लोगों को एक साथ लाती हैं और सामाजिक संबंधों को मजबूत करती हैं। यह कैलेंडर सामुदायिक उत्सवों के लिए एक ढांचा प्रदान करता है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि सांस्कृतिक परंपराएँ पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होती रहें।विक्रम संवत महज एक कैलेंडर से कहीं अधिक है यह भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक है, प्राचीन परंपराओं की बुद्धिमत्ता का प्रमाण है और प्राकृतिक जगत के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए जीवन जीने का मार्गदर्शक है। पौराणिक राजा विक्रमादित्य द्वारा स्थापित यह कैलेंडर सदियों से विकसित होकर हिंदू संस्कृति और समाज का अभिन्न अंग बन गया है। दिवाली और होली जैसे प्रमुख त्योहारों की तिथियों के निर्धारण से लेकर कृषि पद्धतियों और सांस्कृतिक रीति-रिवाजों के मार्गदर्शन तक, विक्रम संवत लाखों लोगों के जीवन को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसकी चंद्र-सौर संरचना, प्राकृतिक चक्रों के साथ इसका सामंजस्य और हिंदू पौराणिक कथाओं से इसका गहरा संबंध इसे जीवन की लय को समझने का एक अनूठा और अमूल्य साधन बनाते हैं। जैसे-जैसे हम हिंदू नव वर्ष मनाते हैं, परंपराओं का सम्मान करते हैं और नई शुरुआत का स्वागत करते हैं, विक्रम संवत हमें एकता, कृतज्ञता और प्रकृति के प्रति श्रद्धा जैसे शाश्वत मूल्यों की याद दिलाता है। यह एक ऐसी विरासत है जो समय की कसौटी पर खरी उतरी है और आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करती रहेगी। भारतीय ज्ञान परंपरा की शुरुआत विश्व पटल पर नजर आती है। इसका उदाहरण जब अरब ने गणित को भारत से लिया। आज भी आधुनिक विज्ञान में बहुत से ऐसे रहस्य हैं, जिसमें शोध की आवश्यकता है। हमारा वैदिक विज्ञान आधुनिक विज्ञान के साथ मिलकर नई दिशा प्रदान कर सकता है।

(लेखक विज्ञान व तकनीकी विषयों के जानकार दून विश्वविद्यालय में कार्यरत हैं।)

कुंभ- 2027 को भव्य एवं दिव्य बनाने के लिए सभी विभाग समन्वय के साथ युद्ध स्तर पर करें काम: मुख्य सचिव आनंद बर्धन

मुख्य सचिव आनंद बर्द्धन की अध्यक्षता में बुधवार को सचिवालय में कुंभ- 2027 के सम्बन्ध में उच्च स्तरीय समिति की बैठक संपन्न हुई

मुख्य सचिव ने विभिन्न ऐसे कार्यों जिनके अभी तक जीओ जारी नहीं हुए हैं, उनके जीओ तत्काल जारी किए जाने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने अस्थायी प्रकृति के छोटे कार्यों की संस्तुती के लिए पॉवर डेलीगेशन किए जाने की बात कही। उन्होंने कहा कि एक करोड़ से कम के अस्थायी कार्यों को आयुक्त गढ़वाल की अध्यक्षता वाली समिति अनुशंसा करेगी। मुख्य सचिव ने निर्देश दिए कि कुंभ से सम्बन्धित चंडीदेवी एवं मनसा देवी का काम शीघ्र शुरू किया जाए। कार्यों को आवश्यकता के अनुरूप प्राथमिकता तय करते हुए संस्तुति प्रदान की जाए। मुख्य सचिव ने विभिन्न विभागों द्व ारा कराए जाने वाले टेंट एवं बैरीकेडिंग आदि की व्यवस्थाएं सुनिश्चित किए जाने वाले कार्यों के लिए एजेंसीज एंपैनल्ड करने हेतु बिडिंग प्रोसेस तत्काल शुरू कराए जाने के निर्देश दिए। उन्होंने सभी संबंधित विभागों के सचिव और विभागाध्यक्षों को अपने-अपने स्तर से शीघ्र कार्यवाही शुरू करें। मुख्य सचिव ने कुंभ कार्यों के लिए ऑडिट टीम भी शीघ्र तैनात किए जाने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने सूचना, पर्यटन एवं संस्कृति विभाग को अगली एचपीसी में अपनी अपनी कार्ययोजना प्रस्तुत किए जाने के भी निर्देश दिए। उन्होंने मेलाधिकारी को कुंभ के दौरान सांस्कृतिक कार्यक्रमों की कार्ययोजना भी प्रस्तुत की जाने की बात कही। मुख्य सचिव ने कनखल में यातायात संकुलन दूर करने हेतु योजना तैयार कर शीघ्र प्रस्तुत किए जाने के निर्देश दिए। उन्होंने मेलाधिकारी को गतिमान निर्माण कार्यों को अक्टूबर 2026 तक अनिवार्य रूप से पूर्ण कराये जाने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने मेलाधिकारी को सभी कार्यों की प्राथमिकता तय किए जाने की बात भी कही। मेलाधिकारी श्रीमती सोनिका ने बताया कि विभिन्न विभागों के रूपये 191.30 करोड़ लागत के कुल 33 कार्य हैं, जिनमें से 31 कार्यों में कार्य प्रारम्भ हो चुका है और शेष 2 कार्यों की निविदा प्रक्रिया गतिमान है। उन्होंने सभी कार्यों को अक्टूबर 2026 तक पूर्ण किए जाने का आश्वासन भी दिया। मुख्य सचिव ने सभी कार्यों की लगातार मॉनिटरिंग किये जाने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने मेलाधिकारी के साथ साथ विभागीय सचिवों को भी अपने स्तर से मॉनिटरिंग किये जाने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने प्रत्येक सचिव समिति बैठक में कुंभ कार्यों से सम्बन्धित प्रगति की रिपोर्ट भी प्रस्तुत किए जाने के निर्देश दिए। इस अवसर पर प्रमुख सचिव श्री आर.के. सुधांशु, सचिव श्री शैलेश बगौली, श्री नितेश कुमार झा, डॉ. पंकज कुमार पाण्डेय, श्री सी. रविशंकर, श्री रणवीर सिंह चौहान एवं श्री विनोद कुमार सुमन सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

मॉक ड्रिल में देखने को मिला अच्छा समन्वय: विनोद सुमन

- **राज्य स्तरीय मॉक ड्रिल का दूसरा चरण सम्पन्न**
- **आठ जनपदों में आपदा से निपटने की तैयारियों का व्यापक परीक्षण: *सचिव आपदा प्रबंधन***

उत्तराखण्ड राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के दिशा-निर्देशन एक निकट पर्यवेक्षण में आयोजित दो दिवसीय राज्य स्तरीय मॉक ड्रिल का दूसरा चरण बुधवार को सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। दूसरे दिन राज्य के शेष आठ जनपदों-हरिद्वार, देहरादून, ऊधमसिंह नगर, चमोली, चम्पावत, टिहरी, पिथौरागढ़ तथा अल्मोड़ा में बहु-स्थलीय मॉक अभ्यास आयोजित कर आपदा प्रबंधन तंत्र की तैयारियों को परखा गया। राज्य आपातकालीन परिचालन केंद्र से सभी मॉक ड्रिल के सभी चरणों की निरंतर निगरानी की गई। इस दौरान विभिन्न संभावित आपदा परिदृश्यों, जैसे बाढ़, भूस्खलन, भूकम्प, औद्योगिक दुर्घटना, वनाग्नि, सड़क दुर्घटना, मानव-वन्यजीव संघर्ष एवं भगदड़ पर आधारित अभ्यास कर विभागों के बीच समन्वय, त्वरित प्रतिक्रिया एवं संसाधनों के उपयोग का परीक्षण किया गया। सचिव आपदा प्रबंधन एवं पुनर्वास श्री विनोद कुमार सुमन ने कहा कि राज्य में आयोजित दोनों दिनों के मॉक अभ्यास सफलतापूर्वक संपन्न हुए हैं। इन अभ्यासों के माध्यम से विभिन्न जनपदों में आपदा प्रबंधन तंत्र की तैयारियों का व्यापक परीक्षण किया गया, जिसमें सभी विभागों एवं एजेंसियों के बीच अच्छा समन्वय देखने को मिला। त्वरित प्रतिक्रिया, संसाधनों की उपलब्धता तथा जमीनी स्तर पर कार्य करने की क्षमता संतोषजनक रही है। मॉक अभ्यासों के दौरान जो भी कमियां एवं चुनौतियां सामने आई हैं, उन्हें गंभीरता से लेते हुए उनका विस्तृत विश्लेषण किया जाएगा। इन कमियों को शीघ्र दूर करने हेतु आवश्यक सुधारात्मक कदम उठाए जाएंगे, ताकि भविष्य में किसी भी वास्तविक आपदा की स्थिति में और अधिक प्रभावी, त्वरित एवं समन्वित तरीके से कार्य किया जा सके।

जनपद हरिद्वार-बाढ़ एवं भगदड़ जैसे जटिल परिदृश्यों पर केंद्रित अभ्यास

जनपद हरिद्वार में हरकी पैड़ी, शिवपुल, मनसा देवी मार्ग, लक्सर एवं रुड़की क्षेत्रों में मॉक ड्रिल आयोजित की गई। गंगा के जलस्तर में अचानक वृद्धि से बाढ़ एवं भगदड़ की स्थिति, श्रद्धालुओं के नदी में बहने, तटबंध टूटने तथा नहर में लोगों के बहने जैसे परिदृश्यों पर राहत एवं बचाव कार्यों का अभ्यास किया गया। टीमों द्व ारा त्वरित रेस्क्यू, भीड़ नियंत्रण, घायलों को प्राथमिक उपचार एवं सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाने की कार्यवाही का प्रभावी प्रदर्शन किया गया।

जनपद देहरादून-बहु-जोखिम परिदृश्यों पर समन्वित प्रतिक्रिया का प्रदर्शन

जनपद देहरादून में ऋषिकेश, विकासनगर, मसूरी एवं कालसी क्षेत्रों में विभिन्न परिदृश्यों पर मॉक अभ्यास किया गया। चारधाम यात्रा ट्रांजिट कैंप में विस्फोट, भारी वर्षा से नदी में बहाव, भूकम्प के बाद आग लगना, मसूरी मार्ग पर भूस्खलन एवं बस दुर्घटना जैसी घटनाओं पर त्वरित प्रतिक्रिया का अभ्यास किया गया। अभ्यास के दौरान पुलिस, एसडीआरएफ, एनडीआरएफ, स्वास्थ्य विभाग एवं अन्य एजेंसियों ने संयुक्त रूप से कार्य करते हुए राहत एवं बचाव कार्यों का प्रभावी प्रदर्शन किया।

जनपद ऊधमसिंह नगर-औद्योगिक एवं बाढ़ परिदृश्यों पर विशेष फोकस

जनपद ऊधमसिंह नगर में किच्छा, गदरपुर, खटीमा, काशीपुर एवं पंतनगर क्षेत्रों में मॉक अभ्यास आयोजित किया गया। बाढ़, नहर तटबंध क्षति, मानव-वन्यजीव संघर्ष तथा औद्योगिक इकाइयों में संभावित दुर्घटनाओं के परिदृश्यों पर राहत एवं बचाव कार्यों का अभ्यास किया गया। इस दौरान औद्योगिक सुरक्षा, रेस्क्यू ऑपरेशन, आपातकालीन प्रतिक्रिया एवं चिकित्सा सहायता की त्वरित व्यवस्था का परीक्षण किया गया।

जनपद चमोली-भूकम्प, भूस्खलन एवं सुरंग दुर्घटना पर अभ्यास

जनपद चमोली में टनल धंसाव, भूकम्प से भवन क्षति, भूस्खलन, एवलांच एवं वनाग्नि जैसी घटनाओं पर आधारित मॉक ड्रिल आयोजित की गई। विभिन्न स्थानों पर फंसे लोगों को सुरक्षित निकालने, घायलों को चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने तथा प्रभावित क्षेत्रों में राहत कार्य संचालित करने का अभ्यास किया गया। मॉक अभ्यास के दौरान विभिन्न विभागों के मध्य समन्वित प्रतिक्रिया देखने को मिली।

जनपद चम्पावत-बहु-आपदा परिदृश्यों पर समग्र परीक्षण

जनपद चम्पावत के चम्पावत, पूर्णागिरि, लोहाघाट, बाराकोट एवं पाटी में रोड ब्लॉक, भूस्खलन, बाढ़, जलभराव, भूकम्प, मानव-वन्यजीव संघर्ष एवं वनाग्नि जैसे परिदृश्यों पर मॉक अभ्यास किया गया।

विभिन्न साइटों पर टीमों द्वारा त्वरित प्रतिक्रिया, संसाधनों के समन्वय एवं राहत-बचाव कार्यों का प्रभावी प्रदर्शन किया गया।

जनपद पिथौरागढ़-भूकम्प, भूस्खलन, मार्ग अवरोध, वनाग्नि एवं रासायनिक दुर्घटनाओं पर केंद्रित अभ्यास

जनपद पिथौरागढ़ में मॉक अभ्यास के दौरान विभिन्न आपदा परिदृश्यों को ध्यान में रखते हुए बहु-स्थलीय अभ्यास आयोजित किया गया। इसके अंतर्गत भूकम्प, भूस्खलन, राष्ट्रीय राजमार्ग अवरोध (रोड ब्लॉक), वनाग्नि तथा केमिकल गैस रिसाव जैसी घटनाओं पर आधारित राहत एवं बचाव कार्यों का अभ्यास किया गया। जिला चिकित्सालय क्षेत्र में भूकम्प के परिदृश्य के तहत भवन क्षति एवं घायलों के रेस्क्यू तथा चिकित्सा सहायता उपलब्ध कराने की कार्यवाही का अभ्यास किया गया। वहीं दूनाघाट क्षेत्र में भूस्खलन की स्थिति को दर्शाते हुए मार्ग अवरुद्ध होने एवं प्रभावित लोगों को सुरक्षित निकालने की प्रक्रिया को परखा गया। धारचूला क्षेत्र में राष्ट्रीय राजमार्ग पर भूस्खलन से रोड ब्लॉक की स्थिति में विभिन्न एजेंसियों द्वारा मार्ग खोलने, फंसे लोगों को निकालने एवं यातायात बहाल करने की कार्यवाही का अभ्यास किया गया।

जनपद अल्मोड़ा-भूकम्प, वनाग्नि, सड़क दुर्घटना एवं बस हादसों पर व्यापक मॉक अभ्यास

जनपद अल्मोड़ा में रानीखेत, द्वाराहाट, सल्ट, भिकियासैंण एवं लमगड़ा क्षेत्रों को चिन्हित करते हुए विभिन्न घटनाओं पर त्वरित प्रतिक्रिया की कार्यवाही की गई। रानीखेत क्षेत्र में भूकम्प के परिदृश्य के तहत भवन क्षति, लोगों के मलबे में दबने एवं घायलों के रेस्क्यू का अभ्यास किया गया। इस दौरान मलबे से लोगों को सुरक्षित निकालकर घायलों को अस्पताल भेजने तथा गंभीर घायलों को उच्च चिकित्सा केंद्रों में रेफर करने की प्रक्रिया को परखा गया। द्वाराहाट क्षेत्र में वनाग्नि की घटना का परिदृश्य प्रस्तुत किया गया, जिसमें जंगल में आग लगने की सूचना पर संबंधित विभागों द्वारा त्वरित कार्रवाई करते हुए आग पर नियंत्रण पाने एवं प्रभावित व्यक्तियों को सुरक्षित निकालने का अभ्यास किया गया। भिकियासैंण क्षेत्र में बस दुर्घटना के तहत बड़ी संख्या में यात्रियों के घायल होने की स्थिति में समन्वित राहत एवं बचाव कार्य संचालित किए गए।

यूकॉस्ट एवं एसआईएमएस संस्थान द्वारा संयुक्त रूप से विश्व जल दिवस 2026 कार्यक्रम का आयोजन

20 मार्च 2026 को उत्तराखंड राज्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद (यूकॉस्ट) द्वारा एसआईएमएस संस्थान के संयुक्त तत्वाधान में विश्व जल दिवस 2026 कार्यक्रम का आयोजन एसआईएमएस संस्थान के परिसर में इस वर्ष की थीम ''वाटर एंड जेंडर'' विषय पर किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में राजकीय उपजिला चिकित्सालय प्रेम नगर के सीएमएस डॉ परमार्थ जोशी ने इस अवसर पर पानी को बचाने में महिलाओं की भागीदारी को महत्वपूर्ण बताया। कार्यक्रम की अध्यक्षता एसआईएमएस संस्थान के अध्यक्ष तुषार सिंघल ने की।

तकनीकी सत्र का प्रथम व्याख्यान भारतीय वन्यजीव संस्थान की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ संगीता एंगोम ने 'जल संसाधन एवं भारतीय वन्यजीवों का संरक्षण' विषय पर विस्तार से व्याख्यान दिया। उन्होंने अपने व्याख्यान में हिमालयी राज्यों में पाए जाने वाले प्राकृतिक जल संसाधनों और उन पर आश्रित वन्यजीवों के संरक्षण पर बल दिया। उन्होंने जल संसाधनों के संरक्षण, प्रबंधन हेतु बनाई जाने वाली नीतियों के निर्माण में महिलाओं के योगदान को महत्वपूर्ण बताया।

तकनीकी सत्र का द्वितीय व्याख्यान यूकॉस्ट की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. मंजू सुंदरियाल ने 'उत्तराखंड राज्य में जल संसाधनों के संरक्षण में मातृशक्ति का योगदान' विषय पर विशेषज्ञ व्याख्यान दिया। उन्होंने उत्तराखंड की परंपरागत जल संस्कृति के विषय में बताया। तकनीकी सत्र का तृतीय व्याख्यान यूकॉस्ट के वैज्ञानिक एवं कार्यक्रम समन्वयक डॉ. भवतोष शर्मा ने 'जल संसाधनों के प्रबंधन एवं संरक्षण में परंपरागत भारतीय ज्ञान विज्ञान की भूमिका एवं वर्तमान विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग' विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने अपने व्याख्यान में उत्तराखंड राज्य के साथ-साथ भारतीय हिमालयी क्षेत्र में जल संसाधनों की उपलब्धता, उनके संरक्षण के तरीके, प्राचीन जल संरक्षण परंपरा और आधुनिक विज्ञान एवं तकनीकी, वर्षा जल संचयन, कृषि में जल संरक्षण के विषय में विस्तार से बताते हुए महिलाओं की भूमिका को महत्वपूर्ण बताया।

कार्यक्रम में संस्थान की प्राचार्य डॉ. ज्योति पंत ने 'जल की गुणवत्ता एवं मानव स्वास्थ्य' विषय पर बोलते हुए सभी से जल का संरक्षण करने, जल प्रदूषित न करने एवं शुद्ध जल का सेवन करने का आवाहन किया। कार्यक्रम में संस्थान के छात्र-छात्राओं द्वारा विश्व जल दिवस की इस वर्ष की थीम 'वाटर एंड जेंडर' विषय पर रंगोली प्रतियोगिता, वॉल पेंटिंग प्रतियोगिता एवं फेस पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया एवं इन तीनों प्रतियोगिताओं के प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान के विजेताओं को प्रशस्ति पत्र एवं मेडल से सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम में उपस्थित समस्त विशेषज्ञों अतिथियों शिक्षकों एवं विद्यार्थियों द्वारा संस्थान की परिसर में अर्जुन, हरड़, रीठा आदि के पौधों का रोपण किया गया। कार्यक्रम के अंत में संस्थान की प्राचार्य डॉ. ज्योति पंत ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम में शिक्षक शिक्षिकाओं एवं छात्र-छात्राओं सहित 160 से अधिक प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया। कार्यक्रम में आरती चौहान, गीतांजलि धनिक, पैरामेडिकल के प्राचार्य डॉ माइल बनन, प्रेम नगर उप जिला चिकित्सालय के संदीप भट्ट आदि मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

लोकसंस्कृति की झलक के साथ आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित होगा राज्य अतिथि गृह

धामी सरकार की पहल, सर्किट हाउस एनेक्सी का होगा कायाकल्प

आवास सचिव डॉ आर राजेश कुमार के औचक निरीक्षण में तेज हुई कायाकल्प की प्रक्रिया

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी व मुख्य सचिव के दिशा-निर्देशों में राज्य की अतिथि सुविधाओं को आधुनिक और आकर्षक बनाने की दिशा में एक और महत्वपूर्ण कदम उठाया गया है। इसी क्रम में गुरुवार को राज्य अतिथि गृह सर्किट हाउस एनेक्सी, देहरादून में नवीनीकरण कार्य को लेकर स्थलीय निरीक्षण किया गया। निरीक्षण की अध्यक्षता आवास व राज्य संपत्ति सचिव डॉ आर राजेश कुमार ने की। इस दौरान उन्होंने नवीनीकरण की प्रस्तावित योजना का गहन अवलोकन करते हुए संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

लोकसंस्कृति के साथ विकसित होगा आधुनिक गेस्ट हाउस

निरीक्षण के दौरान यह तय किया गया कि सर्किट हाउस एनेक्सी को केवल मरम्मत तक सीमित नहीं रखा जाएगा, बल्कि इसे उत्तराखंड की सांस्कृतिक पहचान और आधुनिक सुविधाओं के समन्वय के रूप में विकसित किया जाएगा। विशेष रूप से मीटिंग हॉल के संपूर्ण नवीनीकरण के साथ उसकी दीवारों पर राज्य की लोक संस्कृति को दर्शाने वाली पेंटिंग्स लगाने के निर्देश दिए गए हैं, जिससे यहां आने वाले अतिथियों को प्रदेश की समृद्ध परंपरा की झलक मिल सके।

पहले चरण में कमरों और डोरमैट्री का होगा कायाकल्प

नवीनीकरण कार्य को चरणबद्ध तरीके से पूरा किया जाएगा। प्रथम चरण में मुख्य भवन के कक्ष संख्या 1 से 12 तक (भूतल के 1 से 6 और प्रथम तल के 7 से 12) का कायाकल्प किया जाएगा। इसके साथ ही डोरमैट्री के भूतल पर स्थित कक्ष संख्या 19 से 22 तक के चार कमरों का भी नवीनीकरण किया जाएगा। इन कमरों को आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित करने के साथ उनकी आंतरिक साज-सज्जा को भी बेहतर बनाया जाएगा।

कोरिडोर लाइटिंग और लॉन क्षेत्र में खुलापन बढ़ाने के निर्देश

आवास व राज्य संपत्ति सचिव डॉ आर राजेश कुमार ने कोरिडोर में बेहतर प्रकाश व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए, ताकि आवागमन के दौरान किसी प्रकार की असुविधा न हो। साथ ही डोरमैट्री के कक्षों से सटे लॉन क्षेत्र में खुलापन बढ़ाने के लिए बाउंड्री हटाने के निर्देश भी दिए गए हैं।

दूसरे चरण में विस्तार और नई सुविधाओं पर फोकस

द्वितीय चरण में गेस्ट हाउस परिसर में उपलब्ध स्थान का उपयोग करते हुए इसके विस्तार की संभावनाओं पर विचार किया जाएगा। इसके अतिरिक्त, गेस्ट हाउस में ठहरने वाले अतिथियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए नए गद्दों की खरीद और प्रत्येक कक्ष में डीटीएच कनेक्शन की व्यवस्था सुनिश्चित करने के भी निर्देश दिए गए हैं। इस मौके पर अपर सचिव लक्ष्मण सिंह, मुख्य व्यवस्थाधिकारी आलोक सिंह चौहान, वरिष्ठ व्यवस्थाधिकारी पी.एल. शाह तथा पेयजल निगम के प्रोजेक्ट मैनेजर राकेश चंद्र तिवारी सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

अतिथि गृहों को आधुनिक बनाना सरकार की प्राथमिकता

आवास व राज्य संपत्ति सचिव डॉ आर राजेश कुमार ने कहा कि मुख्यमंत्री के निर्देशानुसार राज्य के अतिथि गृहों को आधुनिक और सुविधाजनक बनाने की दिशा में कार्य तेजी से किया जा रहा है। सर्किट हाउस एनेक्सी का नवीनीकरण केवल संरचनात्मक सुधार तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि इसमें उत्तराखंड की सांस्कृतिक पहचान को भी प्रमुखता दी जाएगी। उन्होंने कहा कि चरणबद्ध तरीके से सभी कक्षों का कायाकल्प किया जाएगा और अतिथियों को उच्च स्तरीय सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएंगी। साथ ही, भविष्य में गेस्ट हाउस के विस्तार की भी योजना है, जिससे बढ़ती आवश्यकता को पूरा किया जा सके।

राज्यपाल ने एआई युग में मीडिया शिक्षा को समयानुकूल बनाने पर दिया जोर

राज्यपाल ने की मीडिया एवं जनसंचार विभागों के विभागाध्यक्षों के साथ बैठक

राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह (से.नि.) ने लोक भवन में प्रदेश के विभिन्न विश्वविद्यालयों के मीडिया एवं जनसंचार विभागों के विभागाध्यक्षों एवं डीन के साथ बैठक की। बैठक में "एआई युग और डिजिटल सूचना पारिस्थितिकी तंत्र में मीडिया शिक्षा: चुनौतियाँ, नैतिकता और अवसर" विषय पर विचार-विमर्श किया गया।

बैठक को संबोधित करते हुए राज्यपाल ने कहा कि आज के समय में एआई और डिजिटल मीडिया ने सूचना देने और पाने के तरीके को पूरी तरह बदल दिया है, इसलिए मीडिया शिक्षा को भी समय के अनुसार बदलना जरूरी है। उन्होंने कहा कि मीडिया केवल खबर देने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह समाज की सोच और धारणा को प्रभावित करता है। इसलिए मीडिया शिक्षा का उद्देश्य सिर्फ अच्छे पत्रकार बनाना नहीं, बल्कि जिम्मेदार नागरिक तैयार करना भी होना चाहिए।

राज्यपाल ने कहा कि आज के समय में फेक न्यूज और गलत जानकारी बड़ी चुनौती बन गई है। इससे निपटने के लिए छात्रों को सही प्रशिक्षण देना जरूरी है। उन्होंने विश्वविद्यालयों से कहा कि अपने पाठ्यक्रम में एआई, डेटा एनालिटिक्स, डिजिटल सुरक्षा और फैक्ट-चेकिंग जैसे विषय शामिल करें।

इस अवसर पर राज्यपाल ने विभागाध्यक्षों से कहा कि वे पत्रकारों के हितों को ध्यान में रखते हुए उनकी आर्थिक स्वतंत्रता को मजबूत बनाने के उपायों पर भी विचार करें। उन्होंने कहा कि पत्रकारों के लिए स्टार्टअप और नवाचार को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, जिससे उनकी आत्मनिर्भरता बढ़े और मीडिया क्षेत्र में नए अवसर सृजित हो सकें। उन्होंने यह भी कहा कि विश्वविद्यालयों और मीडिया संस्थानों को इस दिशा में मार्गदर्शन, प्रशिक्षण और सहयोग प्रदान करने की दिशा में कार्य करना चाहिए, ताकि पत्रकारों को बदलते समय के अनुरूप और अधिक सशक्त बनाया जा सके।

राज्यपाल ने कहा कि वर्तमान समय में तेजी से हो रहे परिवर्तनों को समझना और उसी के अनुरूप स्वयं को ढालना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग राष्ट्र और समाजहित में किया जाना चाहिए तथा इसके माध्यम से आमजन की भलाई सुनिश्चित करने के प्रयास किए जाने चाहिए। राज्यपाल ने कहा कि एआई के सदुपयोग के लिए व्यापक स्तर पर जागरूकता आवश्यक है, ताकि अधिक से अधिक लोग इसका सही दिशा में उपयोग कर सकें। राज्यपाल ने कहा कि भविष्य में भी इस बैठक का नियमित रूप से आयोजन किया जाता रहेगा, ताकि इस विषय पर निरंतर संवाद और सुधार की प्रक्रिया जारी रह सके। राज्यपाल ने कहा कि इस तरह की चर्चाओं से मीडिया शिक्षा को नई दिशा मिलेगी।

दून विश्वविद्यालय के सहयोग से आयोजित इस बैठक में विभिन्न विश्वविद्यालयों से आए डीन एवं विभागाध्यक्षों ने वर्तमान समय में एआई के बढ़ते प्रभाव के बारे अपने-अपने विचार रखते हुए कहा कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस अब मीडिया और शिक्षा दोनों के स्वरूप को तेजी से बदल रहा है। ऐसे में इसे नजरअंदाज करने के बजाय समझदारी के साथ अपनाना समय की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि एआई को एक उपकरण के रूप में उपयोग किया जाना चाहिए, न कि उस पर पूर्ण निर्भरता विकसित की जाए। प्रतिभागियों ने इस बात पर विशेष जोर दिया कि विद्यार्थियों को एआई के सही और जिम्मेदार उपयोग के लिए तैयार करना बेहद आवश्यक है। एआई के बढ़ते प्रभाव के बीच फेक न्यूज और भ्रामक सूचनाओं का प्रसार एक बड़ी चुनौती बनकर सामने आया है, जिसे रोकने के लिए मजबूत फैक्ट-चेकिंग व्यवस्था विकसित करना जरूरी है। उन्होंने सुझाव दिया गया कि मीडिया शिक्षा के पाठ्यक्रम में एआई, फैक्ट-चेकिंग और डिजिटल नैतिकता को अनिवार्य रूप से शामिल किया जाए। इसके साथ ही विभिन्न विश्वविद्यालयों में विद्यार्थियों के लिए एक्सचेंज प्रोग्राम संचालित करने का भी सुझाव दिया गया।

प्रतिभागियों ने यह भी कहा कि विद्यार्थियों को केवल सैद्धांतिक ज्ञान तक सीमित न रखकर उन्हें व्यावहारिक रूप से सक्षम बनाया जाना जरूरी है ताकि वे समाज में मीडिया साक्षरता और जागरूकता फैलाने में भूमिका निभा सकें। बैठक में स्वदेशी दृष्टिकोण के अनुरूप एआई टूल्स विकसित करने की आवश्यकता पर भी बल दिया गया, जिससे भारतीय संदर्भ और जरूरतों के अनुसार मीडिया क्षेत्र को सशक्त बनाया जा सके।

बैठक में अपर सचिव रीना जोशी, संयुक्त निदेशक सूचना डॉ. नितिन उपाध्याय, एचओडी मीडिया एंड मास कम्युनिकेशन दून विश्वविद्यालय प्रो. राजेश कुमार, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के प्रो. राकेश रयाल, यूपीईएस विश्वविद्यालय के प्रो. अमरेश झा, ग्राफिक एरा हिल विश्वविद्यालय की प्रो. ताहा सिद्दीकी, डीबीएस ग्लोबल विश्वविद्यालय के प्रो. जयवीर सिंह, उत्तरांचल विश्वविद्यालय के प्रो. कार्तिकेय गौड़, देव भूमि उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय के प्रो. रवि शंकर उपाध्याय, कोर विश्वविद्यालय के प्रो. पराग रंजन, सुभारती विश्वविद्यालय के प्रो. शील शुक्ला, एसजीआरआर विश्वविद्यालय के प्रो. आशीष कुलश्रेष्ठ, स्पर्श हिमालय विश्वविद्यालय की प्रो. पूजा डबास, तुलास इंस्टीटयूट के प्रो. तौसिफ इकबाल उपस्थित रहे।

सांसद डॉ. नरेश बंसल ने उठाया राज्यसभा मे महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के मिशन वात्सल्य संबंधित प्रश्न

डा. नरेश बंसल ने कहा कि:-

क्या महिला एवं बाल विकास मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:-

क- बच्चों की देखभाल को संस्थागत रूप देने के विकल्प के रूप में परिवार आधारित गैर संस्थागत देखभाल को प्रोत्साहित करने हेतु मिशन वात्सल्य के अंतर्गत उठाए गए उपायों का ब्यौरा क्या है

ख- अब तक स्थापित वात्सल्य सदन का राज्य वार/संघ राज्य क्षेत्र वार ब्यौरा क्या है और

ग- लापता बच्चों का पता लगाने और मामलों के प्रबंधन को बेहतर बनाने के लिए ट्रैक चाइल्ड पोर्टल और मिशन वात्सल्य पोर्टल के एकीकरण तथा उनके प्रभावी उपयोग में अब तक हुई प्रगति का ब्यौरा क्या है?

इस महत्वपूर्ण प्रश्न के उत्तर मे महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती सावित्री ठाकुर ने बताया कि:-

क- यह मंत्रालय, राज्य और संघ राज्य क्षेत्रों की सरकारों के माध्यम से एक केंद्र प्रायोजित योजना मिशन वात्सल्य कार्यान्वित कर रहा है ताकि देखरेख और संरक्षण की आवश्यकता वाले बच्चों (सीएनसीपी) के साथ-साथ विधि का उल्लंघन करने वाले बच्चों (सीसीएल) के लिए विभिन्न सेवाएं प्रदान की जा सकें। इन सेवाओं में संस्थागत देखरेख और गैर संस्थागत देखरेख शामिल है। मिशन वात्सल्य, कठिन परिस्थितियों में रहने वाले बच्चों की परिवार आधारित गैर-संस्थागत देखरेख को बढ़ावा देता है, जो अंतिम उपाय के रूप में बच्चों को संस्थागत देखरेख में रखने के सिद्धांत पर आधारित है। गैर-संस्थागत देखरेख के तहत, बच्चों को प्रायोजन, पालन पोषण देखरेख, दत्तक ग्रहण और पश्चात देखरेख के माध्यम से सहायता दी जाती है। यह योजना गैर-संस्थागत देखरेख (प्रायोजन/पालन-पोषण देखरेख/पश्चात देखरेख) के लिए पात्र बच्चों को प्रतिमाह 4000 रूपये देती है।

ख- अब तक इस मंत्रालय ने मिशन वात्सल्य के अंतर्गत राज्य एवं संघ राज्य क्षेत्रों की सरकारों से प्राप्त प्रस्तावों के आधार पर देशभर में कुल 69 वात्सल्य सदनों को मंजूरी दी है। इन वात्सल्य सदनों का राज्य एवं संघ राज्य क्षेत्र वार ब्यौरा अनुलग्नक में दिया गया है।

ग- मंत्रालय ने राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के परामर्श और ताल-मेल से एकीकृत समरूप मिशन वात्सल्य पोर्टल तैयार किया है। लापता/पाए गए बच्चों के लिए ट्रैक चाइल्ड पोर्टल, लापता/देखे गए बच्चों के लिए खोया-पाया एप्लीकेशन और दत्तक ग्रहण के लिए केयरिंग्स पोर्टल को इस समरूप मिशन वात्सल्य पोर्टल के साथ एकीकृत किया गया है। ट्रैक चाइल्ड पोर्टल विभिन्न हितधारकों जैसे गृह मंत्रालय, रेल मंत्रालय, राज्य सरकारों और संघ राज्य क्षेत्र प्रशासनों, बाल कल्याण समितियों, किशोर न्याय बोर्डों राष्ट्रीय कानूनी सेवा प्राधिकरण इत्यादि के सहयोग और भागीदारी से कार्यान्वित किया जाता है। इस संबंध में मानक संचालन प्रक्रिया जारी की गई है। सभी राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों एवं अन्य हितधारकों को ट्रैक चाइल्ड के कार्यान्वयन के बारे में दिशा-निर्देश (एडवाइजरी) जारी किए गए हैं। यह गृह मंत्रालय के क्राइम एंड क्रिमिनल ट्रैकिंग एंड नेटवर्क सिस्टम (सीसीटीएनएस) के साथ भी एकीकृत है, जिसमें लापता बच्चों के बारे में दर्ज प्राथमिकी (एफआईआर) को ट्रैक चाइल्ड के आंकडों से मिलान करने में परस्पर सहूलियत रहती है और संबंधित राज्य और संघ राज्य क्षेत्र पुलिस द्वारा पता लगाए गए और गुमशुदा बच्चों की संख्या का मिलान करना सरल होता है। इसके अलावा, खोया-पाया मॉडयूल के माध्यम से कोई भी नागरिक किसी भी लापता या देखे गए बच्चों के बारे में सूचना दे सकता है। इसके अतिरिक्त, इस मंत्रालय ने सभी राज्य और संघ राज्य क्षेत्र सरकारों को लापता बच्चों के लिए राज्य और जिला स्तर पर पदनामित नोडल अधिकारी नियुक्त अधिकारी नियुक्त करने का निर्देश दिया है। इन नोडल अधिकारियों का ब्यौरा मिशन वात्सल्य पोर्टल पर अपलोड किया गया है। गृह मंत्रालय ने मिशन वात्सल्य के संबंध में राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों के नोडल अधिकारियों के साथ समन्वय स्थापित करने और लापता बच्चों के बारे में राज्यों तथा संघ राज्य क्षेत्रों से आंकडें एकत्र करने के लिए एक नोडल अधिकारी की नियुक्ति भी की है।

समाजसेवी मनोवैज्ञानिक डॉ. पवन शर्मा को हिमालयी स्वास्थ्य हीरो सम्मान प्राप्त हुआ

प्रख्यात समाजसेवी मनोवैज्ञानिक डॉ. पवन शर्मा (द साइकेडेलिक) को हिमालयी क्षेत्रों में निरंतर, समर्पित और अनुकरणीय मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी जागरूकता और बचाव के लिए सेवायें देने के लिए 'हिमालयी स्वास्थ्य हीरो सम्मान 2026' पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

डॉ. पवन शर्मा को यह पुरस्कार वेलोक्स मीडिया और उत्तराखंड सेतु आयोग द्वारा राजपुर रोड स्थित होटल हयात सेंट्रिक में आयोजित किये गये कार्यक्रम में दिया गया। इस अवसर पर डॉ. पवन शर्मा ने कहा कि मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी कलंक और शर्मिंदगी की भावनाओं को हटा कर जागरुकता बढ़ा कर पहल करने को प्रेरित करना कभी भी आसान नहीं था, और बहुत चुनौतीपूर्ण था। इस तरह पुरस्कृत और सम्मानित होना हौसला बढ़ाने का काम करता है। डॉ. पवन शर्मा युवा पेशेवरों को भी मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में रचनात्मकता और कार्य करने के लिए प्रेरित करते रहते है।

मुख्यमंत्री ने किया सनातन परंपरा पर आधारित पंचांग कैलेंडर का भव्य विमोचन

सूचना एवं लोक संपर्क विभाग की अभिनव पहल-पहली बार प्रकाशित हुआ पंचांग कैलेंडर

हिन्दू नववर्ष के शुभ अवसर पर आज मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी ने मुख्यमंत्री आवास पर सूचना एवं लोक संपर्क विभाग द्वारा प्रकाशित पंचांग कैलेंडर का विधिवत विमोचन किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने इसे राज्य की समृद्ध सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत को सहेजने एवं जन-जन तक पहुंचाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल बताया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि देवभूमि उत्तराखंड अपनी सनातन परंपराओं, धार्मिक आस्थाओं और सांस्कृतिक मूल्यों के लिए देश-विदेश में विशिष्ट पहचान रखता है। यहां की परंपराएं केवल आस्था का विषय नहीं हैं, बल्कि यह हमारी जीवनशैली, सामाजिक संरचना और सांस्कृतिक चेतना का अभिन्न अंग हैं। ऐसे में पंचांग कैलेंडर का प्रकाशन राज्य की इस गौरवशाली विरासत को संरक्षित करने और नई पीढ़ी तक पहुंचाने का एक सशक्त माध्यम बनेगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि यह पंचांग कैलेंडर राज्यवासियों को न केवल तिथि, वार, पक्ष, मास, पर्व एवं विशेष दिवसों की सटीक जानकारी प्रदान करेगा, बल्कि पारंपरिक त्योहारों, व्रतों और धार्मिक आयोजनों की महत्ता से भी अवगत कराएगा। इससे लोगों को अपनी संस्कृति और परंपराओं के साथ और अधिक गहराई से जुड़ने का अवसर मिलेगा।

मुख्यमंत्री ने यह भी उल्लेख किया कि इस पंचांग में देवभूमि उत्तराखंड के प्रमुख धार्मिक एवं आस्था स्थलों को विशेष रूप से स्थान दिया गया है। ये स्थल न केवल श्रद्धा के केंद्र हैं, बल्कि राज्य की ऐतिहासिक और आध्यात्मिक विरासत के प्रतीक भी हैं। इस प्रकार यह कैलेंडर एक जानकारीपरक दस्तावेज होने के साथ-साथ उत्तराखंड की सांस्कृतिक झलक प्रस्तुत करने वाला प्रेरणादायक संकलन भी है। मुख्यमंत्री ने सूचना एवं लोक संपर्क विभाग के इस प्रयास की सराहना करते हुए आशा व्यक्त की कि यह पंचांग कैलेंडर राज्य के प्रत्येक नागरिक के लिए उपयोगी सिद्ध होगा और आने वाले समय में इसे और अधिक समृद्ध एवं व्यापक स्वरूप में प्रस्तुत किया जाएगा।सर पर सचिव विनय शंकर पांडेय, महानिदेशक सूचना बंशीधर तिवारी सहित अन्य अधिकारीगण भी उपस्थित रहे।

आईटीडीए एवं एसईएमटी उत्तराखंड ने आयोजित किया ऐतिहासिक क्षमता निर्माण कार्यशाला

आईटीडेवलपमेंट एजेंसी *(आईटीडीए)*, सूचना प्रौद्योगिकी विभाग, उत्तराखंड सरकार, ने राज्य ई-गवर्नेंस मिशन टीम *(एसईएमटी)*, उत्तराखंड के सहयोग से, 20 मार्च 2026 को देहरादून, उत्तराखंड में डिजिटल व्यक्तिगत डेटा संरक्षण अधिनियम, 2023 एवं डीपीडीपी नियम, 2025 पर एक अर्ध-दिवसीय क्षमता निर्माण कार्यशाला का सफलतापूर्वक आयोजन किया। इस कार्यशाला में उत्तराखंड सरकार के विभिन्न विभागों से 50 से अधिक वरिष्ठ सरकारी अधिकारी एकत्रित हुए, जिसका उद्देश्य भारत के पहले व्यापक डेटा संरक्षण ढाँचे के प्रति आधारभूत जागरूकता और व्यावहारिक समझ विकसित करना था। यह कार्यशाला 13 मई 2027 की वैधानिक प्रवर्तन समय-सीमा से पूर्व डीपीडीपी अनुपालन के लिए उत्तराखंड सरकार के प्रशासनिक तंत्र को तैयार करने की सक्रिय प्रयासों में एक महत्त्वपूर्ण कदम है। ग्रामीण कार्य विभाग, विद्यालयी शिक्षा, सैनिक कल्याण, स्वास्थ्य, समाज कल्याण, सूचना प्रौद्योगिकी, श्रम विभाग, पंचायती राज आदि विभागों के अधिकारियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

कार्यशाला का विधिवत उद्घाटन आलोक कुमार पांडेय, आईएएस, निदेशक आईटीडीए, सूचना प्रौद्योगिकी विभाग, उत्तराखंड सरकार द्वारा किया गया। अपने उद्घाटन भाषण में, निदेशक आईटीडीए ने भारत के डिजिटल शासन पारिस्थितिकी तंत्र के लिए डीपीडीपी अधिनियम के परिवर्तनकारी महत्त्व को रेखांकित किया और इस बात पर प्रकाश डाला कि कानून के तहत डेटा न्यासी के रूप में सरकारी विभागों की विशेष जिम्मेदारी है।

निदेशक, आईटीडीए ने इस बात पर बल दिया कि उत्तराखंड सरकार के विभाग सामूहिक रूप से व्यक्तिगत डेटा के विशाल भंडार रखते हैं-जिनमें भूमि अभिलेख, कल्याण योजना लाभार्थी डेटाबेस, स्वास्थ्य अभिलेख, शैक्षणिक डेटा और नागरिक सेवा पोर्टल शामिल हैं-और इस डेटा की सुरक्षा करना केवल एक कानूनी दायित्व नहीं बल्कि सार्वजनिक विश्वास और संवैधानिक कर्तव्य का विषय है।

कार्यशाला में उपस्थित अधिकारियों की ओर से असाधारण रूप से उच्च स्तर की भागीदारी और सहभागिता देखने को मिली। रवि शंकर सिंह द्वारा सुगम किए गए अनेक इंटरैक्टिव प्रश्न उत्तर दौरों ने विभाग-विशिष्ट डेटा संरक्षण चुनौतियों पर समृद्ध संवाद उत्पन्न किया-जिसमें आधार-लिंक्ड कल्याण डेटाबेस का प्रबंधन, स्कूल छात्रवृत्ति पोर्टलों में बच्चों के डेटा का प्रबंधन, और सार्वजनिक सूचना अधिकारियों के लिए सूचना के अधिकार अधिनियम की धारा 8(1)(j) के डीपीडीपी अधिनियम के संशोधन के निहितार्थ शामिल थे।

स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों ने राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन रिपोर्टिंग के लिए रोगी डेटा साझा करने से संबंधित विशिष्ट प्रश्न उठाए, जबकि राजस्व विभाग के अधिकारियों ने भूलेख भूमि अभिलेख पोर्टल पर व्यक्तिगत जानकारी प्रदर्शित करने पर मार्गदर्शन मांगा। नियम 14(3) के तहत 90-दिन की शिकायत निवारण समयसीमा और नियम 7(2) के तहत 72-घंटे की उल्लंघन रिपोर्टिंग दायित्व पर चर्चा विशेष रूप से सराही गई।

जानिए कैसा होगा आपका यह सप्ताह

पं. दीपक प्रसाद, शास्त्री (मो. 9557730042)
(ज्योतिष, कर्मकाण्ड, धर्मिक अनुष्ठान आदि)

मेष राशि- भाग्योदय का समय है। किसी बदलाव की दिशा में काम आगे बढ़ेगा। परिवार से जुड़े किसी मुद्दे पर आपसी बातचीत के अच्छे नतीजे सामने आएंगे। विद्यार्थी अपना कोई प्रोजेक्ट पूरा करके गर्व महसूस करेंगे। दूसरों की बातों पर बिना सोचे-समझे भरोसा न करें। आपका गुस्सा और जल्दबाजी कई बार आपके लिए परेशानी खड़ी कर सकती है।

मिथुन राशि- अपने निजी कामों को लेकर मन में उत्साह रहेगा। फाइनेंस से जुड़े काम समय पर पूरे हो जाएंगे। संतान की तरफ से कोई शुभ समाचार मिलने से घर में खुशी का माहौल रहेगा। विदेश यात्रा के इच्छुक लोगों का परिवार के साथ कोई प्रोग्राम बन सकता है। बहुत अधिक काम की वजह से स्वभाव में चिड़चिड़ापन आ सकता है।

सिंह राशि- मित्रों और संबंधियों के साथ विचारों का आदान-प्रदान मन को प्रसन्न रखेगा। पारिवारिक सुख-सुविधाओं के लिए शॉपिंग होगी और खर्च का ज्यादा असर महसूस नहीं होगा। दोपहर बाद कोई खुशखबरी मिल सकती है, जो आपकी तरक्की में सहायक रहेगी। घर की कोई अहम बात बाहर जा सकती है। इसका असर घर की व्यवस्था पर पड़ सकता है।

तुला राशि- किसी करीबी संबंधी के आने जैसी शुभ सूचना मिल सकती है, जिससे मन प्रसन्न रहेगा। कोई पारिवारिक यात्रा का प्रोग्राम बन सकता है। पास-पड़ोस में चल रहा विवाद सुलझने से संबंधों में मिठास बढ़ेगी। किसी भी विपरीत परिस्थिति में आत्मविश्वास कमजोर न पड़ने दें। धार्मिक काम के नाम पर कोई आपसे पैसे ऐंठ सकता है।

धनु राशि- किसी भी काम के प्रति आपकी मेहनत और लगन आपको लक्ष्य तक जरूर पहुंचाएगी। आध्यात्मिक क्षेत्र से जुड़े किसी अनुभवी व्यक्ति का सानिध्य मिल सकता है। विद्यार्थी अपने लक्ष्य पर एकाग्र रहेंगे। कोई समस्या हो, तो परिवार के साथ साझा करें, समाधान मिलेगा। गुस्सा और लापरवाही जैसी कमियों में सुधार लाएं।

कुंभ राशि- कुछ अनुभवी लोगों के साथ रहने से आपको सकारात्मक अनुभव और सीख मिलेगी। इससे मुश्किल समस्याओं का हल ढूंढने में मदद मिलेगी। प्रॉपर्टी से जुड़े किसी काम को पूरा करने के लिए समय अच्छा है। घर की किसी मूल्यवान वस्तु की खरीदारी भी हो सकती है। कोई परेशानी आ सकती है, इसलिए किसी अनुभवी व्यक्ति से सलाह लेना ठीक रहेगा।

वृषभ राशि- अपना व्यवहार और सोच सकारात्मक रखें। अनुभवी लोगों का साथ आपको नई दिशा देगा। अध्यात्म में रुचि आपका स्वभाव और विनम्र बनाएगी। गुस्से और जिद पर काबू रखें। भाई-बहनों के साथ किसी गलतफहमी से संबंधों में खटास आ सकती है। कारोबार को लेकर एक के बाद एक परेशानी आ सकती है, लेकिन उनके हल भी मिलते रहेंगे।

कर्क राशि- ग्रह स्थिति में सकारात्मक बदलाव आ रहा है। अच्छे अवसरों का लाभ उठाने के लिए एक्टिव रहें। नई जानकारियां हासिल करने में रुचि रहेगी, जिससे आपकी नॉलेज और व्यक्तित्व दोनों में निखार आएगा। कहीं पैसा फंसा है, तो उसकी वसूली संभव है। रिश्तेदारों के साथ अच्छा तालमेल बनाए रखें और छोटी-मोटी बातों को नजरअंदाज करें।

कन्या राशि- आज किसी करीबी व्यक्ति के सहयोग से कोई रुका काम दोबारा शुरू हो सकता है। इससे आपका खोया हुआ आत्मविश्वास वापस आएगा। युवाओं को करियर से जुड़ी किसी चिंता का समाधान मिल सकता है। अपने व्यवहार में लचीलापन रखें। दूसरों के निजी मामलों में हस्तक्षेप करने से बचें। बहुत अधिक प्रैक्टिकल होना भी संबंध बिगाड़ सकता है।

वृश्चिक राशि- सामाजिक गतिविधियों में अपनी उपस्थिति जरूर रखें। महत्वपूर्ण लोगों से मुलाकात लाभदायक रहेगी। घर और व्यवसाय दोनों जगह अच्छा तालमेल बना रहेगा। अगर कोई पारिवारिक मामला उलझा है, तो आज उसका समाधान निकल सकता है। अचानक कुछ ऐसे खर्च सामने आ सकते हैं, जिन पर कटौती करना मुश्किल होगा।

मकर राशि- यह सप्ताह प्रसन्नता भरा रहेगा। अपने आत्मविश्वास और मनोबल के सहारे किसी खास लक्ष्य को हासिल करने में सफल रहेंगे। कोई नई मित्रता भी विकसित हो सकती है। घर के रखरखाव से जुड़ी योजना में परिवार का सहयोग मिलेगा। किसी भी विपरीत स्थिति में आत्मबल मजबूत रखें। उच्च शिक्षा पाने वाले विद्यार्थी अपने सीनियर के साथ संबंध खराब न करें।

मीन राशि- दिन सुखद रहेगा। कुछ फायदेमंद मौके मिलेंगे, लेकिन उनका सही इस्तेमाल आपकी क्षमता पर निर्भर करेगा। अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का मार्गदर्शन बना रहेगा, जिससे सकारात्मक ऊर्जा महसूस होगी। मित्रों से मुलाकात होगी। आपके अपने ही कुछ लोग आपके बारे में आलोचनात्मक बातें फैला सकते हैं। परिवारजनों के साथ घूमने-फिरने में सुखद समय बीतेगा।

उत्तराखण्ड बाल अधिकार संरक्षण आयोग

(संसद द्वारा पारित सी.पी.सी.आर. अधिनियम 2005 के अंतर्गत)

उत्तराखण्ड बाल अधिकार संरक्षण आयोग बाल अधिकारों को संरक्षित करने के लिये संकल्पित है। 18 वर्ष से कम आयु के हर बच्चे की सुरक्षा एवं समुचित विकास हमारा दायित्व है। बाल हितों के अनुश्रवण हेतु निम्नवत कार्य निरन्तर गतिमान है-

- राज्य के हर बच्चे को बिना किसी रुकावट व सम्पूर्ण सुविधा सहित, शिक्षा का अधिकार अधिनियम व राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरुप उच्च स्तरीय शिक्षा प्राप्त हो।
- किसी भी विद्यालय में विद्यार्थियों के प्रति मानसिक व शारीरिक क्रूरता पर रोक लगाने हेतु।
- सभी शारीरिक व मानसिक दिव्यांग बच्चों को भी पूर्ण शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा व विकास के पूर्ण अवसर सुलभ हो।
- हर बच्चे को मिले बेहतर मानिसक व शारीरिक स्वास्थ्य सेवायें, चिकित्सकीय जाँच व कुपोषण से बचाव।
- बाल सम्बन्धी सभी राष्ट्रीय व राज्य स्तरीय योजनाओं का बिना किसी भेदभाव के सभी बच्चों को मिले लाभ एवं बाल देखरेख संस्थाओं में बच्चों को मिले बेहतर देखभाल।
- बालश्रम, बाल भिक्षावृति, कूड़ा बीनने वाले बच्चों व children on street को पुनर्वासित करवाना व उनको बेहतर शिक्षा, स्वास्थ्य व skill development के अवसर प्राप्त हो का अनुश्रवण करने हेतु।
- बच्चों को मिले शारीरिक, मानसिक व यौन शोषण और उत्पीड़न से सुरक्षा।
- बच्चों को नशे, साईबर अपराध से सुरक्षा हेतु।

नोट- शिक्षा का अधिकार अधिनियम, पोकसो अधिनियम, किशोर न्याय अधिनियम, बालश्रम अधिनियम व अन्य बच्चो से सम्बन्धित कानूनों के तहत कार्यवाही का आयोग को अधिकार है। उपरोक्त वर्णित शिकायत या किसी अन्य शिकायत के लिये आयोग में सम्पर्क कर सकते हैं।

डा० गीता खन्ना, अध्यक्ष

सम्पर्क सूत्र- निकट नन्दा की चौकी, विकासनगर रोड, पो0ओ0 चन्दनवाड़ी, देहरादून-248007 (उत्तराखण्ड)
Telephone- 9258127046 (WhatsApp) Email Id: scpcr.uk@gmail.com
Website: www.scpcruk.org.in

R.N.I.: UTTHIN/2010/41629 | Postal Regd. UA/DO/DDN/01/2025-2027